सम्पादक
हारून रशीद
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

**सहयोग राशि**

| | |
|---|---|
| एक प्रति | ₹ 30/- |
| वार्षिक | ₹ 300/- |
| विदेशों में (वार्षिक) | 50 युएस. डॉलर |

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
**SACCHA RAHI**

**SACCHA RAHI**
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
# सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

जून, 2021 वर्ष 20 अंक 04

## गर्मी

जून की गर्मी बहुत मशहूर है
हवा लू देने पर मामूर है
खरबूज़े तरबूज़ में क्या लुत्फ़ है
तो ककड़ी पतली भी पुर लुत्फ़ है
जो शरबत नींबू का मरग़ूब है
कुल्फी अमीना बाद की महबूब है
ये लस्सी दे रही है क्या बहार
दही की धूम है लैलो नहार
ख़ुदा की भेजी गर्मी आई है
ख़ुदा की नेअ़मतें भी साथ लाई है

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

# विषय एक दृष्टि में


| | | |
|---|---|---|
| कुर्आन की शिक्षा | मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी | 05 |
| प्यारे नबी की प्यारी बातें | अमतुल्लाह तस्नीम | 08 |
| ह़ज पर जाने वालों के नाम | डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी | 09 |
| धर्म और ज्ञान का पवित्र रिश्ता | हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी | 15 |
| तम्बाकू नोशी और इस्लाम | डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी | 18 |
| हज के दौरान औरतों की नापाकी | इदारा | 20 |
| क़िस्सा अब्बासी ख़लीफ़ा | सम्पादक | 21 |
| आपके प्रश्नों के उत्तर | मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी | 25 |
| घरेलू मसायल | मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0 | 27 |
| नदवतुल उलमा के दो बड़े | इदारा | 29 |
| हज़रत मूसा और हज़रत ख़िज्र | पवित्र कुर्आन | 30 |
| इतिहास के झरोके से | इदारा | 32 |
| सौंफ | राशिदा नूरी | 33 |
| सोशल मीडिया का संक्षिप्त परिचय | इंज़िमामुल हक़ नदवी | 34 |
| घटना एक अन्ध विश्वास की | फौज़िया सिद्दीक़ा | 39 |
| अपील बराए तामीर | इदारा | 41 |
| उर्दू सीखिए | इदारा | 42 |

# क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

**सूर-ए-अल आ़राफ़ :**

**अनुवाद–**

और जिस समय हमने पहाड़ उनके ऊपर उठा दिया जैसे वह छत (साएबान) हो और वे समझे कि वह उन पर गिर ही पड़े (उस समय हमने कहा) जो कुछ भी हमने तुम्हें दिया है उसको मज़बूती के साथ पकड़ लो और उसमें जो है उसको याद रखो ताकि तुम सावधानी बरतो [1](171) और जब आपके पालनहार ने आदम की संतान की पीठों से उनका वंश निकाला और खुद उनसे अपनी जानों पर इकरार लिया कि क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ, वे बोले क्यों नहीं, हम इस पर गवाह हैं (यह इसलिए किया) कि कयामत के दिन कभी तुम कहने लगो कि हमें तो इसका पता ही न था (172) या यह कहने लगो कि पहले हमारे बाप दादा ने शिर्क किया और हम उनके बाद (उन्हीं की) संतान हैं तो क्या गुमराहों ने जो किया तू उसके बदले में हम को विनष्ट करेगा[2](173) और इस प्रकार हम आयतें खोल–खोल कर बयान करते हैं कि शायद वे लौट आएं(174) और उनको उस व्यक्ति की कहानी सुना दीजिए जिसको हमने अपनी निशानियाँ दीं तो वह उनसे निकल भागा फिर शैतान उसके पीछे लग गया तो वह गुमराहों में हो गया [3](175) और अगर हम चाहते तो उन (निशानियाँ) से उसको बुलन्दी प्रदान करते लेकिन वह ज़मीन का हो कर रह गया और अपनी इच्छा पर चला तो उसकी मिसाल कुत्ते की तरह है अगर तुम उस पर हमला करो तो हाँपे या उसको छोड़ दो तो हाँपे, यह उन लोगों की मिसाल है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तो यह कहानी उनको सुना दीजिए शायद वे सोचें(176) उन लोगों की बहुत बुरी मिसाल है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और वे अपना ही नुकसान करते रहे(177) जिसे अल्लाह राह चला दे वही हिदायत पर है और जिसको वह गुमराह कर दे तो वही लोग घाटे में हैं [4](178) और हमने दोज़ख के लिए बहुत से जिन्नात और इन्सान पैदा किये हैं उनके दिल हैं, जिनसे वे समझते नहीं और आँखें हैं जिनसे वे देखते नहीं और कान हैं जिनसे वे सुनते नहीं, वे तो जानवरों की तरह हैं बल्कि उनसे गये गुज़रे हैं, वही लोग गाफ़िल (अचेत) हैं [5](179) और अल्लाह के अच्छे अच्छे

**नाम हैं तो उन्हीं से उसको पुकारो और जो उसके नामों में टेढ़ अपनाते हैं उनको छोड़ दो जो वे कर रहे हैं उसकी सज़ा उनको जल्द ही मिल जाएगी [6](180) और हमारे पैदा किए हुए लोगों में एक वह उम्मत (सम्प्रदाय) है जो सत्य का मार्ग बताती है और उसी के अनुसार इंसाफ़ करती है [7](181) और जिन्होंने हमारी आयतें झुठलाईं हम उनको धीरे–धीरे ऐसी जगहों से पकड़ेंगे कि वे जान भी न पाएंगे(182) और मैं उनको ढील देता हूँ बेशक मेरा दांव पक्का है [8](183) क्या वे विचार नहीं करते कि उनके साथी को कुछ भी दीवानगी नहीं वे तो खुल कर डराने वाले हैं(184) क्या उन्होंने आसमानों और ज़मीन की बादशाही में और जो चीज़ें भी अल्लाह ने पैदा की उनमें विचार नहीं किया और यह (नहीं सोचा) कि शायद उनका काल करीब ही आ पहुँचा हो, इसके बाद वे किस बात को मानेंगे(185) अल्लाह जिसको गुमराह कर दे उसको कोई हिदायत देने वाला नहीं वह उनको उनकी सरकशी (उदण्डता) में भटकता छोड़ देता है [9](186) वे आपसे क़यामत के बारे में पूछते रहते हैं कि कब उसके आने का समय है, कह दीजिए उसका ज्ञान तो तेरे पालनहार के पास है वही अपने समय पर उसको ज़ाहिर कर देगा, आसमानों और ज़मीन पर वह भारी है, अचानक ही वह तुम पर आजाएगी, वे आपसे ऐसा पूछते हैं कि मानो आप उसकी खोज में हैं कह दीजिए उसका पता अल्लाह ही को है लेकिन अधिकतर लोग बेख़बर हैं(187)।**

**तफ़्सीर (व्याख्या):–**

*1. बनी इस्राईल ने तौरेत को देख कर कहा कि इसके आदेश सख़्त हैं हम अमल नहीं कर सकते इस पर यह घटना घटी कि तूर पहाड़ उनके ऊपर कर दिया गया और कहा गया कि अगर नहीं मानते तो पहाड़ तुम पर गिरा दिया जाएगा मजबूर हो कर उनको प्रण लेना पड़ा।*

*2. विशेष प्रण के बाद अब आम प्रण का उल्लेख किया जा रहा है जिसको ''अहदे अलस्त'' भी कहते हैं, अल्लाह ने आदम अलै0 की पीठ से उनकी संतान निकाली जब सब लोग सामने आ गये तो सबसे अपने पालनहार होने का प्रण लिया, यही वह प्रकृति है जो हर इंसान के भीतर अल्लाह ने रखी है, फिर वह परिस्थितियों से प्रभावित हो कर सब कुछ भुला देता है तो अगर कोई बाप दादा की दुहाई देता है और अपने शिर्क को उनका अनुसरण करार देता है तो यह खुद उसकी ग़लती है उसको चाहिए था कि वह प्रकृति (फ़ितरत) को मालूम करता जो नबियों ने हमेशा बतायी है और आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको बहुत स्पष्ट रूप से बताया है और उस पर चल कर अपने पैदा करने वाले*

*का हक़ अदा करता और अपने लिए नजात का सामान तैयार करता और उस पर चलता।*

*3. अधिकतर व्याख्याकारों ने इसको बलअम पुत्र बाऊरा की कहानी क़रार दिया है जो हज़रत मूसा की क़ौम में बड़ा विद्वान था, बाद में अल्लाह की आयतों और हिदायतों को छोड़ कर दौलत और औरत के चक्कर में आ कर मूसा के मुकाबले में आ गया और हमेशा के लिए मरदूद हो गया। अगर उसको आयतों और हिदायतों पर अमल की तौफ़ीक होती तो उत्कृष्ठ पदवी प्राप्त होती लेकिन उसकी मिसाल कुत्ते से दी गई कि हर हाल में उसकी ज़ुबान लोभ में निकली रहती है इसमें बड़ी शिक्षा है उलमा–ए–सू (बुरे इस्लामी विद्वानों) के लिए जो सब कुछ ज्ञान रखते हुए भी लालच और लोभ में पड़ जाते हैं।*

*4. आदमी कभी अपने ज्ञान पर गर्व न करे हमेशा अल्लाह से हिदायत मांगता रहे।*

*5. न प्रकृति की निशानियों में विचार करते हैं न अल्लाह की आयतों का पैनी नज़र से अध्ययन करते हैं और अल्लाह की बातों को दिल खोल कर सुनते हैं जिस तरह जानवर केवल खाने पीने और पाश्विक भावनाओं में सीमित होते हैं यही हाल उन लोगों का है और जानवरों का हाल भी यह है कि मालिक बुलाए तो आ जाते हैं ये तो उनसे भी गये गुज़रे हैं अपने असली मालिक की ओर निगाह उठा कर नहीं देखते यही वे लोग हैं जो मानो दोज़ख के लिए पैदा हुए हैं।*

*6. असावधान लोगों के उल्लेख के बाद अब ईमान वालों को चेताया जा रहा है कि वे हमेशा खुदा को याद रखें और उसके नामों में असावधान लोगों की तरह टेढ़ न अपनायें।*

*7. यह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत का उल्लेख है जिसको खैर–ए–उम्मत (सबसे अच्छा समुदाय) कहा गया और जिस का काम अच्छाई का आदेश देना और बुराई से रोकना है।*

*8. अपराधियों को कभी कभी तुरन्त सज़ा नहीं दी जाती, ढील दी जाती है फिर जब वे पूरी तरह गुमराही में डूब जाते हैं तो अचानक सख़्त पकड़ होती है।*

*9. सारी निशानियां अल्लाह की कुदरत की मौजूद हैं खुद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी सारे गुणों के साथ उनकी आँखों के सामने हैं इसके बावजूद वे मानते नहीं और आपको पागल कहते हैं (मआज़ल्लाह), बस अल्लाह जिसको गुमराह कर दे कौन उसको राह पर ला सकता है।*

❖❖❖

**–प्रस्तुति–**
**जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी**

## अनुरोध

**अगर आपको ''सच्चा राही'' की सेवायें पसन्द हों तो आप से अनुरोध है कि ''सच्चा राही'' के नये ग्राहक बनाने का प्रयास करें, अल्लाह आपको अज्र देगा और हम आपके आभारी होंगे।**

**(सम्पादक)**

# प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

**इस्तिग़्फ़ार (अल्लाह से मग्फिरत चाहने) का बयानः–**

कुरआने करीम की बेशुमार आयतों में अल्लाह से मग्फ़िरत तलब करने का जिक्र है जिसका अनुवाद पेश हैः—

1. और अपने गुनाहों की बख्शिश चाहो।

(सूरः मुहम्मद रुक—2)

2. अल्लाह से बख्शिश चाहो, बेशक अल्लाह बख्शने वाला रहमत वाला है।

(सूरः निसा रुक—6)

3. अपने रब की पाकी बयान करो और बख्शिश चाहो बेशक वह माफ करने वाला है।

(सूरः नस्र)

4. जो लोग परहेजगार हैं उनके लिए अल्लाह के यहां जन्नत के बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं वह उसमें हमेशा रहेंग उसमें बीवियाँ साफ सुथरी हैं और अल्लाह की खुशनूदी है और अल्लाह अपने बन्दों को देख रहा है।

**इस्तिगफार की फ़ज़ीलत व अहमियतः–**

हज़रत अगर्र अल मुज़नी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया एक बार मेरे दिल पर एक पर्दा सा पड़ जाता है और मैं एक एक दिन सौ सौ बार इस्तिगफार कर लेता हूं। (मुस्लिम)।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है, फरमाते थे कि खुदा की क़सम मैं दिन में सत्तर बार से ज़ियादा तौबा और इस्तिगफ़ार करता हूँ। (बुख़ारी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्जे में मेरी जान है, अगर तुम गुनाह न करो तो अल्लाह तआला तुम को फना कर दे और दूसरे ऐसे लोगों को पैदा कर देते जो गुनाह करके अल्लाह तआला से मगफिरत चाहें, और अल्लाह तआला उनको बख्श दे। (मुस्लिम)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि एक मज्लिस में रसूलुल्लाह सल्ल0 ने सौ मर्तबा पढ़ा, अनुवाद'— ''ऐ अल्लाह मुझे बख्श दे मेरी तौबा कबूल कर बेशक तू ही तौबा कबूल करने वाला है, रहमत वाला है'' हम इसको शुमार करते जाते थे।

(अबू दाऊद—तिर्मिज़ी)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसने इस्तिगफार को अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया तो अल्लाह तआला उसकी हर तंगी को

शेष पृष्ठ .....24....पर

# हज पर जाने वालों के नाम

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

इस्लाम के पाँच रुक्न हैं, शहादत का कलिमा ज़ुबान से पढ़ना और दिल से मानना, नमाज़ क़ाइम करना, साहिबे निसाब हो तो माल की सालाना ज़कात देना। रमज़ान के रोज़े रखना, इस्तिताअ़त हो तो ज़िन्दगी में एक बार ह़ज करना। ह़ज फ़र्ज़ है और उमरा सुन्नत है।

यह जून का महीना है, इसी में ह़ज का सफर किया जायेगा, हो सकता है कुछ फराइज़ मई में भी हों, इसलिए ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ कुछ ज़रूरी बातें लिखी जा रही हैं, हो सकता है हमारे पाठकों में से कोई ह़ज पर जा रहा हो, तो यह ज़रूरी बातें उसकी जानकारी में आ जाएं। या हमारा प्रिय पाठक किसी ह़ज पर जाने वाले को जानकारी दे सके।

हज तीन तरह के होते हैं—

1. क़िरानः— इसमें एक एहराम से उमरा व हज दोनों किये जाते हैं।

2. इफराद— इसमें एक एहराम से हज किया जाता है, उमरा नहीं कर सकते।

3. तमत्तो— इसमें एक एहराम से उमरा करते हैं फिर सर मुण्डा कर हलाल हो जाते हैं, फिर दूसरा एहराम 8 जिलहिज्ज को बांधते हैं, हमारे मुल्क के लोग आमतौर से तमत्तो हज करते हैं इसलिए मोतबर किताबों की मदद से तमत्तो हज की बातें लिखी जा रही हैं।

अगर आपका सफर पहले मदीने का है तो हवाई जहाज़ में दुरूद व सलाम पढ़ते हुए सफर कीजिए, मदीना मुनव्वरा पहुंच कर क़ियाम गाह पर सामान वगैरह रख कर इस्तिंजा वगैरह और दूसरी ज़रूरियात से फारिग़ हो कर पाक व साफ बा वुज़ू नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में दाखिल हों, किसी वक़्त की फर्ज़ की जमाअ़त हो रही हो तो उसमें शामिल हो जाएं, वर्ना दो रकअ़त नमाज़ तहीयतुल मस्जिद पढ़ कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम पढ़ें, तिलावत करें, दुआएं मांगे, जब किसी वक़्त की जमाअत हो तो उसमें शरीक हों, भीड़ के सबब रौज़े पर हाज़िरी का मौक़ा वक्फे वक्फे से दिया जाता है, मर्दों को अलग मौक़ा मिलता है औरतों को अलग।

मालूम रहे कि रौज़े में तीन क़ब्रें हैं, मदीने से क़िब्ला दक्खिन है, जनाज़े को क़ब्र में पूरब पश्चिम लिटाते हैं। ज़नाजे का सर पश्चिम रख कर करवट दिला कर क़िब्ला रुख कर देते हैं, रौज़े में तीन क़ब्रे हैं, पहली नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की, उनके पीछे दूसरी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 की ज़रा पूरब की तरफ़ खिसक कर है, उनके पीछे हज़रत उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र पूरब की तरफ़ कुछ ज़ियादा खिसक कर है, क़ब्रों के चारों तरफ़ दीवार है।

दीवार पर पर्दा पड़ा

है, क़ब्रें किसी तरह दिखती नहीं हैं, पर्दे वाली दीवार से दक्खिन की तरफ दूसरी दीवार है, दक्खिन की इस दीवार में लगभग तीन चार फिट ऊँचाई पर चार गोल सूराख हैं, पश्चिम वाले पहले सूराख के सामने किसी का सामना नहीं है, नम्बर दो सूराख़ के सामने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सामना है, नम्बर तीन वाले सूराख के सामने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का सामना है। नम्बर चार वाले सूराख के सामने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का सामना है, आखिर के तीनों सूराख़ मवाजह शरीफ कहलाते हैं, ज़ाइर इन तीनों के सामने अलग अलग सलाम पेश करता है, उलमा ने अलग अलग लम्बे लम्बे सलाम लिखे हैं जो सलाम चाहें पढ़ें, लेकिन मेरे नज़दीक मुख़्तसर सलाम यह है। नम्बर दो सूराख़ के सामने कहे'' अस्सलामु अलैक अय्युहन नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु'' फिर नम्बर तीन सूराख़ के सामने कहे, ''अस्सलामु अलैक या ख़लीफ–ए–रसूलिल्लाहि अबा बकरिन व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु'' फिर सूराख़ नम्बर चार के सामने कहे, "अस्सलामु अलैक या अमीरल मोमिनीन उमर रहमतुल्लाहि व बरकातुहु''।

याद रहे जहाँ अस्सलामु अलैक कहेंगे वहां अस्सलामु अलैकुम नहीं कहेंगे, भीड़ की वजह से रौज़े के सामने रुकने नहीं दिया जाता है, सलाम कर के आगे बढ़ते जायें ताकि दूसरे भाइयों को भी सलाम करने का मौक़ा मिल सके।

मस्जिदे नबवी में पार्टिशन कर के औरतों का हिस्सा अलग़ कर दिया गया है, औरतें भी इसी तरह सलाम पढ़ें, मदीने में चालीस फर्ज़ नमाज़ें जमाअत से पढ़ें और जब मौका दिया जाये रौज़े पर सलाम पढ़ें।

किसी दिन इश्राक़ की नमाज़ के बाद ज़ियारत को जाएं, ज़ियारत के लिए मस्जिद के दरवाज़े पर किराये की गाड़ियां मिलती हैं उन गाड़ियों पर बैठ कर उहुद पहाड़ की ज़ियारत करें, उहुद की लड़ाई में शहीद सत्तर शहीदों को सलाम पेश करें, और पढ़ कर बख्शें, फिर मस्जिदे कुबा जाएं, वहां मस्जिद में दो रकअ़त नमाज़ पढ़ें, फिर मस्जिदे क़िब्लतैन जाएं वहां भी दो रकअ़त नमाज़ पढ़ें, फिर सबअ़ मसाजिद के पास से गुज़रें वहां उतरने की ज़रूरत नहीं, फिर जन्नतुल बक़ीअ़ जाएं, अगर खुली मिले तो अन्दर जा कर क़ब्रों की ज़ियारत करें सलाम पढ़ें, कुछ ईसाले सवाब करें, अगर बन्द मिले तो बाहर ही से सलाम इस तरहे करें, अस्सलामु अलैकु या अहल जन्नतिल बक़ीअ़ व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु, फिर कुछ ईसाले सवाब करें, और वापस आ जाएं, इसी तरह रोज़ाना वक़्त गुज़ारें, इश्राक़ पढ़ें, तहज्जुद पढ़ें, और नवाफिल पढ़ें, तिलावत करें, दुआयें माँगें, दुरूदो सलाम पढ़ें, और जब वक़्त पूरा हो जाये तो मस्जिदे नबवी से मक्का मुकर्रमा रवाना हों, मदीना तय्यिबा छोड़ने का ग़म हो, दुरूदो सलाम पढ़ते आँसू, बहाते बस से रवाना हों,

थोड़ी देर में जुलहुलैफा पहुंचेंगे, इसको बिअ़रे अली भी कहते हैं, यह मदीने की तरफ से मक्का मुकर्रमा जाने वालों की मीक़ात है, यहां बस रुकेगी और एहराम बांधने का मौका दिया जायेगा, यहां बड़ी सी मस्जिद है बहुत से गुस्ल ख़ाने और बैतुलख़ला वगैरह हैं, यहां नहा धो कर पाक साफ हो कर एहराम बाँधेंगे।

अगर अपने मुल्क से पहले मक्का पहुंचाया जाये तो अपने मुल्क के एयरपोर्ट पर एहराम बांधना चाहिए, एहराम चाहे जिस मीक़ात पर बांधे उसका तरीक़ा लिखा जाता है।

मर्द बावुजू हो कर सिले कपड़े अलग कर दें, और दो चादरें एहराम की पहन लें, एक नीचे बांध लें एक ऊपर ओढ़ लें, औरतें अपने कपड़े में रहें, अब दो रकअत नमाज़ पढ़ें इसमें सर ढका रहे, सलाम फेर कर सर खोल दें। और उमरे की नीयत करें कि ऐ अल्लाह मैं उमरा की नीयत करता हूं, मेरे लिए उमरा आसान फरमा, और लब्बैक इस तरह आवाज़ से पढ़ें।

''लब्बैक, अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक, ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल हम्द वन्निअ़मत लक वलमुल्क ला शरीक लक''।

अब सफर शुरु करें और लब्बैक ख़ूब पढ़ते रहें और जब लब्बैक कहें तो एक कैफियत पैदा करें कि अल्लाह तआला मुझ को पुकार रहा है, मैं जवाब में लब्बैक (हाज़िर हूँ) कह रहा हूँ, मर्द सर न ढकें, औरतें चेहरा न ढकें, कोई अजनबी आ जाये तो पंखा वगैरह से आड़ कर लें, ख़ुशबू न लगायें, नाखुन न काटें, बाल न काटें न उखाड़ें, गुनाह से हमेशा बचना चाहिए एहराम की हालत में और बचना चाहिए। मक्का मुकर्रमा पहुँच कर क़ियामगाह पर सामान वगैरह रख कर पाक साफ हो कर बावुजू हो कर हरम शरीफ जायें, जिसको मस्जिदे हराम भी कहते हैं, कअ़बे पर नज़र पड़ते ही लब्बैक कहना बंद कर दें और ख़ूब दुआ़यें करें। मर्द एहराम की ऊपर की चादर दायें शाने के बीच से निकाल कर बायें शाने पर डाल लें इसको इज़तिबाअ़ कहते हैं, यह उमरे तवाफ में सातों चक्करों में मर्द के लिए मसनून है।

कअ़बा चार दीवारों से घिरा है, पूरब की तरफ ऊँचाई पर कअ़बे का दरवाज़ा है, यह दीवारें पूरी तरह पूरब–पश्चिम, उत्तर–दक्खिन नहीं हैं, ज़रा कोना लिए हुए है, पूरब–उत्तर वाला कोना रुकने ईराक़ी कहलाता है, उत्तर–पश्चिम वाला कोना रुकने शामी कहलाता है, पश्चिम दक्खिन वाला कोना रुक्ने यमानी कहलाता है। पूरब दक्खिन वाला कोना हजरे अस्वद का कोना कहलाता है, इस कोने पर गडढेदार काला पत्थर जड़ा है। रुक्ने ईराक़ी और शामी के बीच हतीम का हिस्सा है जो कअ़बे ही का हिस्सा है, यह लगभग चार फिट ऊँची दीवारों से घिरा है, इस पर छत नहीं है, इसमें दाखिल होने और निकलने का रास्ता है।

ख़ूब दुआयें करते हुए

हज़रे अस्वद के पास आयें और हजरे से एक हाथ रुकने यमानी की तरफ हट कर कअ़बे की तरफ मुंह करके तवाफ की नीयत करें, ''ऐ अल्लाह मैं तवाफ की नीयत करता हूं मेरे लिए तवाफ आसान फरमा दे''।

फिर खिसक कर ह़जर के सामने आ जायें और दाहिने हाथ से ह़जर को छू कर हाथ चूम लें और अल्लाहु अकबर कह कर दाहिने हाथ की तरफ मुंह करके तवाफ शुरु करें।

भीड़ के सबब हजर के पास पहुंचना बहुत मुश्किल है इसलिए हजर की सीध में हरी बत्तियाँ लगा दी गयी हैं लिहाज़ा हरी बत्तियों की सीध में पहुंच कर तवाफ की नीयत करके हजर की तरफ़ हाथ उठायें और अल्लाहु अकबर कह कर तवाफ शुरु कर दें। तवाफ करते वक़्त कअ़बा बायें हाथ होगा, रुक्ने ईराक़ी के बाद जो हतीम है उसके बाहर से तवाफ़ करें, चक्कर लगाते हुए जब ह़जरे अस्वद के पास पहुंचेंगे तो एक चक्कर हो जायेगा, उमरे के तवाफ में मर्दों के लिए पहले तीन चक्करों में अकड़–अकड़ कर चलना सुन्नत है, तवाफ में ख़ूब दुआयें करें, कुर्आन शरीफ की दुआयें, हदीस की दुआयें या अपनी ज़बान में दुआयें मांगे तिलावत भी कर सकते हैं, रुक्ने यमानी और ह़जर के बीच में बेहतर है ''रब्बना आतिना फिद्दुन्या हसनतंव व फिल आख़िरति हसनतंव वक़िना अ़ज़ाबन्नार'' पढ़ें, यह एक चक्कर हुआ, फिर ह़ज़रे अस्वद का इस्तिलाम करें, यानी करीब हो तो हाथ लगा कर चूम लें दूर हो तो हाथ उठा कर अल्लाहु अकबर कह कर दूसरा चक्कर शुरु करें, इस तरह सात चक्कर पूरे करें, जो हजरे अस्वद पर पूरे होंगे, अब मताफ से निकल कर जहां जगह मिले दो रकअ़त नमाज़ पढ़ें, फिर ज़मज़म पियें, खूब दुआ़यें करें, अब ह़जरे अस्वद का इस्तिलाम करते हुए सफा पहाड़ी पर जायें, पहाड़ी पर पहुंच कर अल्लाहु अकबर कहें, चौथा कलिमा पढ़ें और नीयत करें कि ऐ अल्लाह मैं सई की नीयत करता हूं मेरे लिए सई करना आसान फरमा, अब मरवा की तरफ चलें, थोड़ा चलने के बाद दो हरी बत्तियाँ दिखेंगी, इनको मीलैन अख़ज़रेन कहते हैं, इनके दरमियान मर्द तेज़ चलें, सई में भी ख़ूब दुआ़यें करें, मरवा पहुंचने पर एक शौत (चक्कर) हुआ, अब मरवा से फिर सफा की तरफ़ चलें, सफा पहुंच कर दो शौत हुए, इसी तरह सात शौत पूरे करें, सातवां शौत मरवा पर ख़त्म होगा, अब औरतें अपने हाथ से या अपने मेहरम से एक अंगुल चोटी से बाल काट लें, मर्द बाहर निकल कर सर के बाल मुंडवा दें या कतरवा दें, उमरा पूरा हुआ। अब अपनी क़ियामगाह पर आ कर आम कपड़े में हो जायें। और आठ ज़िलहिज्ज का इंतज़ार करें।

अब जब तक मक्के में रहें कोशिश करके रोज़ाना ह़रम में हाज़िरी दें, जमाअ़त की नमाज़ में शरीक हों, और जितना हो सके तवाफ करें, अगर किसी वजह से हरम में

हाज़िर न हो सकें तो अपने कमरे में साथियों के साथ जमाअ़त से नमाज़ पढ़ते रहें। दुआ़यें करें, तिलावत करें, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम पढ़ते रहें। यहां तक कि आठ जिलहिज्ज आ जाये, आज आप को मिना जाना है।

अगर आपको मक्का में रहते हुए 15 दिन या उससे ज़ियादा हो चुके हैं तो आप मुक़ीम हैं, हनफ़ी उलमा के नज़दीक मिना अरफ़ात और मुज़दलफा मे मुक़ीम रहेंगे और नमाज़ें क़स्र न पढ़ेंगे, पूरी पढ़ेंगे लेकिन सऊदी उलमा का फत्वा है चाहे आप मुकीम हों, मिना अ़रफात और मुज़दलफा में जुह्र, अस्र और इशा की फर्ज़ क़स्र से पढ़ेंगे।

आठ ज़िलहिज्ज को जैसे उमरे का एहराम बाँधा था ह़ज का एहराम बांधिये और नीयत में कहिए "ऐ अल्लाह! मैं हज की नीयत करता हूं मेरे लिए ह़ज करना आसान फरमा"। फिर उमरे की नीयत के बाद जैसे लब्बैक पढ़ रहे थे वैसे ही खूब लब्बैक पढ़ते रहें, और एहराम में जिन बातों से बचना ज़रूरी है उनसे बचते रहें।

अब मिना जायें मिना पहुंच कर वहां जुह्र, अस्र, मगरिब, इशा और 9 ज़िलहिज्ज की फज्र नमाज़ें अदा करें, 9 ज़िलहिज्ज को फर्ज़ नमाज़ के सलाम फेरने पर तकबीरे तश्रीक़ मर्द बुलन्द आवाज़ से और औरतें आहिस्ता आवाज़ से पढ़ें और यह तकबीर हर फर्ज़ के बाद तेरह जिलहिज्ज तक पढ़ते रहें।

अब आप को अरफात जाना है, अरफात पहुंच कर जब जुह्र का वक्त आये तो अपने ख़ेमे में अपने साथियों के साथ एक अज़ान और इक़ामत से जुह्र पढ़ें फिर दूसरी इक़ामत से अस्र पढ़ें यानी जुह्र, अस्र जमा करें।

याद रहे मिना में बैतुल ख़ला वगैरह का अच्छा इंतिज़ाम है और खाना खरीद कर मिलता है, अ़रफात में बैतुल ख़ला का अच्छा इंतिज़म है मगर वहां खाना खरीद कर नहीं मिलता इंतिज़ामिया की तरफ़ से जुह्र बाद खाना तकसीम होता है।

अरफ़ात में खूब लब्बैक पढ़ें खूब दुआ़यें करें, पूरा वक़्त दुआओं में गुज़ार दें यहां तक कि मगरिब का वक़्त हो जाये, मगर मग़रिब की नमाज़ पढ़े बग़ैर मुज़दलफा रवाना हो जायें, मुज़दलफ़ा में खेमा नहीं है बैतुल ख़ला वगैरह हैं खाना खरीद कर मिलता है जहां जगह मिले खुले मैदान में अपने साथियों के साथ क़ियाम करें, और वुज़ू करके अज़ान कहें और पहले मग़रिब पढ़ें फिर इशा पढ़ें, अब आराम करें और जो अल्लाह तौफीक दे खूब दुआयें करें, फ़ज्र के वक़्त फज्र की नमाज़ पढ़ें और दुआ करते हुए थोड़ी देर ठहरें इसको वुकूफ़े मुज्दल्फा कहते हैं, यह वाजिब है फिर शैतानों को कंकरियाँ मारने के लिए 49 कंकरियां चुन लें चुन कर महफूज़ कर लें फिर मिना से क़ियाम गाह को रवाना हों भीड़ के सबब सवारी नहीं मिलती बड़ी मुशिकलों से मिना पहुंचना होता है वहां ज़रूरियात से

फ़ारिग़ हो कर सात कंकरियाँ ले कर जमरात जाएं और जमरए अ़क़्बा (बड़ा शैतान) पहुंच कर लब्बैक कहना बंद कर दें और एक–एक करके उसको सातों कंकरियाँ मारें हर कंकरी पर अल्लाहु अकबर कहें वहां से बनाये हुए क़ाइदे के मुताबिक़ वापस आयें कुरबानी करें अगर किसी से कुरबानी करवाया है तो जब यकीन हो जाये कि कुरबानी हो गई तो सर मुंडायें फिर नहा धो कर आम कपड़े पहन लें और हरम जाएं वहां तवाफ़े ज़ियारत करें तवाफ़े ज़ियारत में भी अगर एहराम के कपड़े न उतारे हों तो इज़्तिबाअ़ करें आम कपड़ों में हों तो इज़्तिबाअ़ न करें मगर तीन चक्करों में झपट कर या अकड़ अकड़ कर चलें तवाफ़ के बाद सई करें और ख़ेमें में वापस आ जाएं। 11 तारीख को 21 कंकरियाँ लेकर जमरात जाएं पहले जमरए ऊला (छोटा शैतान) को सात कंकरियां एक–एक करके अल्लाहु अकबर पढ़ते हुए मारें और दुआ करते हुए जमरए वुस्ता (मझले शैतान) को एक–एक करके अल्लाहु अकबर पढ़ते हुए सात कंकरियां मारे फिर दुआ पढ़ते हुए जमरए अक़्बा (बड़े शैतान) की तरफ़ बढ़ें और उसको भी एक एक करके अल्लाहु अकबर कहते हुए सात कंकरियाँ मारें और वहां के ज़ाबितों की पाबन्दी करते हुए ख़ेमा वापस आयें।

मालूम रहे कि दस ज़िलहिज्ज को कंकरियाँ मारना (रमी करना) सुब्ह से शाम तक रहता है बल्कि रात में भी कंकरियाँ मार सकते हैं, लेकिन ग्यारह–बारह ज़िलहिज्ज को जुह्र बाद से कंकरियाँ मारना (रमी करना) चाहिए लेकिन बहुत ज़ियादा भीड़ के सबब सऊदी उलमा ने ग्यारह बारह को भी सुब्ह से कंकरियाँ मारने का फत्वा दे दिया है, चुनांचि इस पर अमल हो रहा है।

बारह जिलहिज्ज को भी ग्यारह की तरह तीनों शैतानों को कंकरियां मारें, तीनों दिन कंकरियां मारना वाजिब है, मालूम रहे जमरा के माने कंकरी के हैं, शैतान के नहीं हैं, लेकिन लोगों ने उनको शैतान कहना शुरु कर दिया, इसलिए कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इन्हीं तीनों मकामात पर शैतान को कंकरियां मारी थीं।

बारह जिलहिज्ज को कंकरियाँ मार कर खेमे वापस आयें और मग़रिब से पहले मिना छोड़ दें, अपनी कियामगाह पर आ जायें, इस दिन भी भीड़ के सबब सवारियाँ नहीं मिलती किसी तरह हाजी अपने क़ियामगाह तक पहुंचता है।

ह़ज पूरा हुआ अल्लाह कुबूल करे अब अपनी वापसी की तारीख का इंतिजार करें और जितनी तौफीक़ मिले हरम में नमाज़ें पढ़ें और तवाफ करें। और सफरे वापसी से पहले तवाफे वदाअ़ करें और ज़मज़म व खजूर के साथ वतन पहुँचें और लोगों को ज़मज़म पिलायें खजूर खिलायें और उनके लिए दुआयें करें।

❖❖❖

# धर्म और ज्ञान का पवित्र रिश्ता

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) — अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

कुर्आन ने ज्ञान को जो गरिमा प्रदान की और विद्वानों का जो आदर व सम्मान किया उसकी नजीर भूतपूर्व आसमानी किताबों और प्राचीन धर्मों में नहीं मिलती। कुर्आन ने ज्ञान और ज्ञानी की ऐसी परिभाषा की कि उन्हें नबियों के नीचे शेष सभी मनुष्यों में सबसे से ऊपर के वर्ग में पहुंचा दिया। कुर्आन कहता हैः–

अनुवादः– *''अल्लाह की गवाही है कि कोई माबूद (पूज्य) नहीं कि सिवाय उसके और फरिश्तों (देवदूत) और ज्ञानी लोगों की (भी गवाही यही है) और वह न्याय से व्यवस्था रखने वाला माबूद है। कोई माबूद नहीं सिवाय उस ज़बरदस्त हिकमत वाले के।'' (सूरः आले इमरान–18)*

अनुवादः– *''आप कह दीजिए कि ऐ मेरे परवरदिगार बढ़ा दे मेरे इल्म को''।*

*(सूरः ताहा–114)*

अनुवादः– *''आप कह दीजिए कि क्या इल्म वाले और बेइल्म कहीं बराबर भी होते हैं''। (सूरः जुमर–9)*

अनुवादः– *''अल्लाह तुम में ईमान वालों के और उनके जिन्हें ज्ञान मिला है दर्जे बुलन्द करेगा''। (सूरः मुजादलः 11)*

अनुवादः– *''अल्लाह से डरते तो बस वही बन्दे हैं जो इल्म वाले हैं।*

*(सूरः फ़ातिर–28)*

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का कथन है किः–

अनुवादः– *''आलिम की फ़ज़ीलत आबिद पर ऐसी है जैसी मेरी श्रेष्ठता तुम में से अदना इन्सान पर है''।*

अनुवादः– *''विद्वान नबियों के वारिस हैं और नबियों ने धन दौलत नहीं बल्कि यह ज्ञान ही मीरास में छोड़ा है तो जिसने इसे हासिल किया उसने बड़ा हिस्सा पाया।''*

ज्ञान के इस प्रोत्साहन तथा उसकी गरिमा बढ़ाने के नतीजे में इस्लामी इतिहास में ज्ञान के प्रति लोगों में ऐसी लगन व तनमयता पैदा हुई जिसके फलस्वरूप इस विश्वव्यापी बौद्धिक आन्दोलन ने समय और समाव के दृष्टिकोण से सबसे बड़ी यात्रा तय की। और भावार्थ में तो यह यात्रा समय व समाव दोनों से बढ़ी हुई है।

विख्यात फ्राँसीसी लेखक डॉ0 लेबान अपनी रचना ''अरब कल्चर'' में लिखते हैंः–

''अरबों ने जो तत्परता ज्ञानार्जन में दिखाई है वह आश्चर्यजनक है, इस मामले में अनेक क़ौमें उनके बराबर हुई हैं लेकिन मुश्किल से कोई उनके आगे निकल सकी है। जब वह किसी शहर को लेते तो उनका पहला काम वहां मस्जिद व मदरसा बनाना हुआ करता। बड़े शहरों में उनके मदरसे बड़ी संख्या में होते थे।

'बेंजमिन–द–ली–तोवेल जिसकी मृत्यु सन् 1173 ई0 में हुई है, बयान करता है कि उसने –इस्कन्दरिया' में बीस मदरसे देखे।

सामान्य शिक्षण संस्थाओं के अतिरिक्त, बग़दाद, क़ाहिरा, कुर्तुबा *(Cordoba)* तली तला *(Toledo)* आदि में यूनिवर्सिटियां थी जिनमें शोध संस्थान खाद्य भण्डार, पुस्तकालय आदि मौजूद होते। केवल स्पेन में सत्तर पुस्तकालय थे।

अरब के इतिहासकारों के मतानुसार 'अल–हाकिम ज्ञानी' के पुस्तकालय में जो 'कुर्तबा' में था, छः लाख किताबें थीं जिनकी सूची चौवालीस खण्डों में थी। इसके बारे में किसी ने बहुत सही कहा है कि, चार सौ वर्ष बाद जब 'चार्ल्स आकि़ल' ने फ्राँस की स्टेट लाइब्रेरी की बुन्याद डाली तो वह नौ सौ किताबों से अधिक न जमा कर सका और उनमें से धार्मिक पुस्तकों की एक पूरी अल्मारी भी न थी।''

ज्ञान को सार्थक बनाने तथा उसे रचनात्मक व लाभप्रद बनाने में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के अभ्युदय व इस्लामी आह्वान की भूमिका उससे अधिक महत्वपूर्ण है जो उसने ज्ञानार्जन के अभियान को सक्रिय व सार्वभौमिक बनाने में अदा किया है।

ज्ञान की कड़ियाँ बिखरी हुई थीं और कहीं–कहीं उनमें विरोधाभास भी था। ज्ञान प्रकृति व धर्मतंत्र से टकराता था। यहां तक कि गणित व चिकित्सा शास्त्र जैसे मासूम विषयों के पंडित भी कभी–कभी ऐसे निष्कर्ष निकालते थे जिससे खुदा की जात का इन्कार होता था। अतएव यूनान के विद्वान या तो खुदा की ज़ात में किसी को शरीक करते थे अथवा ख़ुदा की ज़ात का इन्कार करते थे। और यूनान के विद्यामन्दिर धर्म के लिए खतरा और नास्तिकों के लिए सनद और नमूना बने हुए थे। ऐसी दशा में इस्लाम का यह महान उपकार था कि उसने ऐसी 'वहदत' क़ायम की जो ज्ञान की तमाम इकाइयों को जोड़ती थी। और उसके लिए ऐसा करना इस लिए आसान हो सका कि ज्ञान के क्षेत्र में उसने अपनी यात्रा सही बिन्दु से प्रारम्भ की थी उसने यह सफ़र अल्लाह पर ईमान, उसकी मदद व सहायता की कामना और उस पर विश्वास तथा ''पढ़ो अल्लाह के नाम से'' के परिपालन से शुरु किया था। और शुभारम्भ ठीक होने पर प्रायः अन्त अच्छा ही हुआ करता है। कुर्आन में लिखा है कि :–

अनुवादः–*''और आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते रहते हैं। ऐ हमारे परवरदिगार! तूने यह (सब) निरर्थक नहीं पैदा किया है तू पाक है, सो महफ़ूज़ रख हम को दोजख़ के अज़ाब से।''*

*(सूरः आले इमरान–191)*

पिछले समय में सृष्टि की एकताओं में मनुष्य को विरोधाभास दिखाई पड़ता था जो उसे अचम्भे में डाल देता था जो उसे कभी खुदा की ज़ात का इन्कार करने पर आमादा करते थे। इसे देखते हुए ईमान और कुर्आन पर आधारित ''इस्लामी ज्ञान'' ने दुन्या को ऐसा ऐक्य (वहदत) प्रदान किया जो सृष्टि की एकताओं को जमा कर देता है।

एक महान जर्मन विद्वान हेराल्ड होफडिंग 'वहदत' का उल्लेख करते हुए मानव जीवन में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका की व्याख्या करते हुए लिखते हैंः—

''हर मज़हब का ईमान 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) पर है जिस का सिद्धान्त यह है कि सृष्टि की प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति का कारण एक ही है। यह विश्वास मानव प्रवृत्ति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। और इसके मानने वालों के लिए यह विश्वास बिठाना सरल हो जाता है कि सृष्टि की प्रत्येक वस्तु एक सैद्धान्तिक ऐक्य से जुड़ी है क्योंकि उनकी उत्पत्ति का कारण एक ही है।

मध्य युग की धार्मिक विचारधारा ने अनेकता में एकता की बात लोगों के मन मस्तिष्क में बिठा दी थी। इसके फसस्वरूप असभ्य मानव प्रकृति की विविधता के कारण इसके प्रति उदासीन था और इस अनेकता को देखने में वह ऐसा खोया रहता था कि उसके हाथ में इनमे पारस्परिक सम्बन्ध जोड़ने का कोई संकाय न था।''

इस प्रकार ज्ञान सार्थक, लाभप्रद और ईश्वर तक पहुंचने का साधन बन गया और वह मानवता की सेवा में लग गया। यह विचारधारा मानव चिन्तन के प्रति सच से बड़ा उपकार था जिसने मानवता के भाग्य और उसके चिन्तन को एक नई दिशा प्रदान की। पश्चिम के विद्वानों ने भी मानव चिन्तन के प्रति कुर्आन के इस एहसान का उल्लेख किया है। हम यहां केवल दो विद्वानों के उद्धारण प्रस्तुत करते हैंः—

विख्यात ओरियन्टलिस्ट जी0 मारगोल्यूथ *(G. Margoliouth)* जो अपनी इस्लाम दुश्मनी के लिए मशहूर हैं। जे0एम0 राडबे *(G.M. Rodwell)* के 'कुर्आन के अनुवाद' के आमुख में लिखा हैः—

''हम को इस पर आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि कुर्आन ज्ञान का स्रोत है। आकाश, धरती, मानवजीवन, व्यापार व व्यवसाय जिनका इसमें उल्लेख किया गया है, उन पर अनेक पुस्तकों अथवा टीकाओं में प्रकाश डाला गया और उन पर वाद विवाद का द्वार खुला और मुसलमानों में अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न प्रकार के ज्ञान के विकास की राह समतल हुई। इसने केवल अरबों को ही प्रभावित नहीं किया बल्कि यहूदी दर्शन शास्त्र को भी इस पर आमादा किया कि वह धार्मिक व अप्राकृतिक समस्याओं पर अरबों की पैरवी करे और अन्ततः ईसाई भाषा विज्ञान का अरब के ब्रहमज्ञान से सम्बन्धि शास्त्रादि (इलाहियात) से जिस प्रकार लाभ पहुंचा उसका उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है।

आध्यात्मवाद के क्षेत्र में इस्लाम के प्रयास धर्मतन्त्र तक सीमित नहीं रहे। यूनानी अन्तरिक्ष ज्ञान और चिकिस्सा

**शेष पृष्ठ....26....पर**

# तम्बाकू नोशी और इस्लाम

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी

तम्बाकू नोशी हमारे इन्सानी मुआशरे की एक बड़ी कमज़ोरी है, इसके जिस्मानी व ज़ेहनी नुक्सानात से बे परवाह एक बड़े तबक़ा में जारी है, तम्बाकू नोशी के रुजहान को कम करने और उस पर काबू पाने के लिए बहुत सी किताबें लिखी गई हैं, इन्सानी सेहत पर उसके गहरे असरात, इज्तिमाई और इक़्तिसादी हैसियत से उसके बड़े नुक़्सानात का तज़्किरा और उन पर तफ़्सीली बहस, वाक़िआ़त व हक़ाइक़ और आदाद व शुमार की रौशनी में उसके मन्फ़ी पहलुओं को उजागर करने के लिए मुख़्तलिफ़ ज़राए इख़्तियार किए गए और उसके नुक़सानात का जाइज़ा लेने के लिए और इन्सानी आबादी के वसी रक़्बे तक उसकी आवाज़ पहुंचाने के लिए न जाने कितनी बैठकें और काँफ्रेंसें मुनअ़क़िद हो चुकी हैं, सबसे पहले इस बुरी आदत, बल्कि इस ज़ेहनी बीमारी की शुरुआत वक़्ती सुकून हासिल करने के लिए ''कोलम्बस'' के एक साथी जहाज़ के कैप्टन ने किया, यह अपने जहाज़ को पुर्तगाल ले कर आया था और वहाँ इस वबा को फैलाने में उसने अहम किरदार अदा किया, फिर तम्बाकू नोशी की बीमारी पुर्तगाल में मुतअय्यन फ्राँस के सफीर ''जाननेकू'' ने फैलाई, और उसी के नाम से नेकूटीन का माद्दा ईजाद हुआ, जो तम्बाकू का बुन्यादी जुज़ करार दिया जाता है, फिर यहीं से यह बीमारी दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुल्कों में आम हुई और वक़्ती तौर पर ज़ेहनी सुकून हासिल करने के लिए लोगों ने इसका इस्तेमाल शुरु कर दिया, पहली आलमी जंग सन् 1914—1918 के दौरान बाहम दस्त व गरीबां हुकूमतों ने अपने फौजियों को चाक़ व चौबन्द रखने के लिए मुफ़्त तरीक़े से इसको तक़्सीम किया, और इसको भी एक हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया।

अगरचे वक़्ती तौर पर तम्बाकू नोशी से एक सुरूर

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

की कैफ़ियत पैदा हो जाती है और उसकी वजह से इन्सान उस का आदी बन जाता है फिर यह आदत इस क़द्र रासिख़ हो जाती है कि इससे छुटकारा पाना तकरीबन ना मुमकिन तसव्वुर किया जाता है।

तम्बाकू के तफ़्सीली मुताला से यह बात साबित हो चुकी है कि तम्बाकू के अन्दर 250 ज़हरीले माद्दे मौजूद हैं, उनमें सब से बुन्यादी ज़हर नेकोटीन है। इसका सब से बुरा असर दिल की धड़कन और हाई ब्लडप्रेशर की शक्ल में ज़ाहिर होता है। इसके अ़लावा और दूसरी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं जैसे फेफड़े का कैंसर, हलक़ और आँतों और गुर्दे की बीमारियाँ, इसके अलावा (अल्सर) मेदे का ज़ख़्म और उसकी वजह से और दूसरी बीमारियां पैदा हो जाती हैं जिनका इलाज भी मुश्किल होता है।

तम्बाकू नोशी के घातक असरात तम्बाकू नोश करने

वाले पर इस तरह मुरत्तब होते हैं कि उसकी उम्र तकरीबन 12 साल कम हो जाती है। जाएज़ा के मुताबिक उसकी एक ख़ुराक ज़िन्दगी के 18 सेकेण्ड कम करती है, मरने वालों में उन लोगों की तादाद निस्बतन बहुत ज़ियादा होती है, जो तम्बाकू को इस्तेमाल करते हैं। तम्बाकू नोश करने वाले अफ़राद दिल–दिमाग़ की बीमारियों के ज़ियादा शिकार होते हैं। 99 फीसद तम्बाकू नोश दमा या *(Asthma)* के मरीज़ होते हैं। तम्बाकू न सिर्फ पूरे आज़ाए जिस्म को मुतअस्सिर करता है, बल्कि अक़्ली तवाज़ुन को भी सल्ब कर लेता है, खाँसी, नज़ला, रगों की सोज़िश, नरख़रे में कैंसर यह सब अम्राज़ तम्बाकू के इस्तेमाल से वजूद पज़ीर होते हैं।

*Sunday Times* के तिब्बी कालम निगार *Olepher Telly* ने माहनामा *Reader Digest sthma)* में शीर्षक ''तम्बाकू नोशी शाहों के लिए भी सम्मे क़ातिल'' एक मक़ाला लिखा और उसमें ज़िक्र किया कि बरतानिया के चार हुक्मरां ऐसे गुजरे हैं जो तम्बाकू के आदी थे और इसी मरज़ में उनका इन्तिक़ाल भी हुआ।

1. शाह इन्गलिस्तान हफ़्तुम एडवर्ड *(Edward)* ने तम्बाकू को मुआशरती सतेह पर बहुत रिवाज दिया, उसका मामूल था कि नाश्ता से पहले पाबन्दी से इसका इस्तेमाल करता था, जब उसकी उम्र चालीस साल की हुई तो रगों की सोज़िश में मुब्तला हुआ, डाक्टरों ने तम्बाकू की परहेज़ बताई लेकिन उसने तवज्जो नहीं दी, बिलआख़िर 60 साल की उम्र में उसका मानसिक सन्तुलन बिगड़ गया और 68 साल की उम्र में उसकी वफात हो गई।

2. शाह पंजुम *(George)* भी तम्बाकू नोशी का आदी था, चुनांचे उसको मुतअद्दिद अम्राज़ लाहिक हुए, उम्र की सातवीं दहाई में यही अमराज़ जान लेवा साबित हुए।

3. शाह शशुम (छठे) *(George)* और उसके भाई एडवर्ड हशतुम को 12, 13 साल ही की उम्र से तम्बाकू नोशी की आदत पड़ गई थी, दिन में वह दोनों चालीस, पचास बार उसका इस्तेमाल करते थे, तम्बाकू की कसरते इस्तेमाल से एक को फेफड़े और दूसरे को हलक़ का कैंसर हुआ, और इसी मरज़ में सन् 1952 के साल में इन दोनों की ज़िन्दगी का चराग़ गुल हो गया।

इस मौके पर लन्दन के मशहूर अख़्बारात *(London Times)* और *(Jardon Times)* में तम्बाकू नोशी से मुतअ़ल्लिक़ बहुत से मक़ालात लिखे गये, इनमें इंसिदाद तम्बाकू नोशी की मुहिम की पुरज़ोर ताईद भी की गई है।

आज इस ज़माने में जब कि नशा आवर चीज़ों की आदत बहुत फैल चुकी है, और तम्बाकू का इस्तेमाल करके ज़ेहनी सुकून हासिल करने और जिम्मे दारियों के बोझ से फरार इख़्तियार करने की सूरते हाल बहुत आम हो चुकी है, ज़रूरी है कि इस लत के इंसिदाद के लिए एक मुहिम छेड़ी जाए जो अपनी तासीर और इफ़ादियत के एतिबार से पूरी तरह कामयाब हो, और

**शेष पृष्ठ .....24....पर**

# ह़ज के दौरान औरतों की नापाकी के मसाइल

—इदारा

औरत मदीना मुनव्वरा पहुँची, नापाकी ह़ैज़ की हालत में है तो वह मस्जिद में दाख़िल न होगी मस्जिदे नबवी के दरवाज़े पर जा कर मस्जिद की ज़ियारत करेगी, गुम्बदे ख़ज़रा की ज़ियारत करेगी और दुरूदो सलाम पढ़ कर वापस आ जाएगी, पाक होने के बाद ही मस्जिद में दाख़िल होगी, अल्बत्ता ज़ियारत को जाएगी, उहुद के शहीदों को सलाम करेगी मस्जिदे कुबा और मस्जिदे क़िबलतैन की बाहर से ज़ियारत करेगी, जन्नतुल बक़ी में दफ़्न बुज़ुर्गों को सलाम करेगी, ख़ूब दुआएं करेगी, दुरूदो सलाम पढ़ेगी मगर कुर्आन की आयतें न पढ़ेगी, जब तक पाक न हो जाए।

उमरे का एहराम बांधते वक़्त नापाक हैज़ से है वुजू करेगी नमाज़ न पढ़ेगी, नीयत करके लब्बैक पढ़ेगी यानी एहराम में आ जाएगी मक्का मुकर्रमा पहुंच कर पाक होने का इन्तज़ार करेगी पाक होने के बाद उमरा पूरा करेगी।

आठ ज़िलहिज्जा को एहराम बांधते वक़्त नापाक हैज़ से है वुजू करेगी नमाज़ न पढ़ेगी हज की नीयत कर के लब्बैक पढ़ेगी मिना जाएगी अरफ़ात जाएगी मुज़्दल्फ़ा में क़ियाम करेगी दुआएं करेगी लब्बैक पढ़ेगी जब तक पाक न हो नमाज़े न पढ़ेगी तीनों दिन की रमी करेगी तवाफ़े ज़ियारत दस ज़िलहिज्जा को अफ़ज़ल है मगर 12 ज़िलहिज्जा को मग़रिब से पहले तक कर सकते हैं और अगर हैज़ से है तो पाक होने तक 12 के बाद भी तवाफ़ ज़ियारत कर सकती है।

❖❖❖

# ज़िन्दगी को क़ीमती बनाइये

1. हर वक़्त होशियार रहो, क्योंकि वक़्त थोड़ा और काम बहुत है, हर दिन अपने कामों का हिसाब करो और समझो कि तुमने क्या खोया और क्या पाया, जिस दिन कोई नई बात न सीखी तो समझ लो कि वह दिन बेकार गया।
2. हमेशा सच बोलो, सच सब आफ़तों से बचाता है, झूठ से परहेज़ करो क्योंकि वह आख़िरकार तबाह कर देता है।
3. तुम दूसरों के साथ ऐसा सुलूक करो, जैसा तुम उनसे अपने लिए चाहते हो, किसी पर ऐब न लगाओ तो तुम पर भी ऐब न लगाया जायेगा, तुम औरों की मदद करो, ख़ुदा तुम्हारी मदद करेगा।

कभी भूल कर किसी से न करो सुलूक ऐसा
कि जो तुम से कोई करता तुम्हें नागवार होता

# क़िस्सा अब्बासी ख़लीफ़ा हारून रशीद की एक बीवी का

## जिसने शाही महल में जाने से इन्कार कर दिया था और गायब हो गई थी

—सम्पादक

**नोटः** यह क़िस्सा अब से चालीस साल पहले अरबी में पढ़ा था चूंकि क़िस्सा हैरत अंगेज़ है इसलिए पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है।

**अपराधः** शहज़ादा हारून रशीद, दूध बेचने वाले की बेटी "शहज़ादी" अम्मा साबिरा, यह एक मुअम्मर ख़ातून हैं जो बेवा हैं लावल्द हैं एक बाग़ की मालिका हैं, बाग़ से अच्छी आमदनी है इसलिए साहिबे सर्वत हैं, मोहताजों की मदद करने में मशहूर हैं, ख़लीफा मेहदी का ज़माना है, शहज़ादा हारून रशीद उनके बेटे हैं, शादी शुदा हैं वह रोज़ाना सुब्ह को घोड़े पर सवार हो कर तन्हा सैर व तफ़रीह के लिए निकलते हैं।

एक दिन काफी दूर निकल गया उसको प्यास मालूम हुई, एक आबादी मिली, सड़क के किनारे एक साफ सुथरा घर दिखाई दिया, घोड़ा रोका, एक जवान लड़की सामने आई, पूछा क्या हुक्म है, हारून रशीद ने कहा एक प्याला पानी, लड़की घुड़सवार की शक्ल सूरत से बहुत मुतअस्सिर हुई, वह एक दूध बेचने वाले की लड़की थी, वह एक प्याला ठण्डा दूध ले कर हाजिर हुई, हारून रशीद ने दूध पिया और उसकी क़ीमत पूछी लड़की ने कहा उसकी क़ीमत आपकी दोबारा आमद है, हारून रशीद ने कहा मैं दोबारा ज़रूर आऊँगा मगर इस शर्त पर कि तुम दूध की क़ीमत ले लो, लड़की ने मजबूरन कुछ क़ीमत बताई, हारून रशीद ने उससे ज़ियादा क़ीमत अदा की और चल दिया लड़की देर तक घुड़सवार को देखती रही।

हारून रशीद लड़की को दिल दे चुका था, अब वह रोज़ाना लड़की के यहां उसी वक़्त पहुंचता और दूध पी कर क़ीमत दे कर चल देता। एक दिन हारून रशीद ने लड़की से नाम पूछा, लड़की ने जवाब दिया, मेरे वालिदैन मुझे "शहज़ादी" कहते हैं, आप भी अपना तआ़रुफ कराइए, जवाब मिला मुझे हारून रशीद कहते हैं, मैं एक ताजिर का बेटा हूँ।

शहज़ादी के वालिद ने देखा कि दोनों रोज़ाना मिलते हैं, ऐसा लगता है दोनों करीब होना चाहते हैं, चुनांचि शहज़ादी के वालिद ने हारून रशीद से बात की हारून रशीद ने जवाब दिया, मैं शहज़ादी को चाहता हूँ, मगर दो शर्तों पर, एक तो यह कि निकाह में मसलहतन शोहरत नहीं चाहता आप बाप बेटे और आपके वालिद गवाह रहें हम दोनों ईजाब व क़बूल कर लें, दूसरे यह कि हम अभी शहज़ादी को अपने घर न ले जायेंगे कुछ महीनों वह यहीं रहेगी हम रोज़ाना आधा पौन घण्टे यहीं आराम करेंगे, इंशाअल्लाह पूरा ख़र्च हमारे ज़िम्मे रहेगा, शहज़ादी के वालिद ने शर्त मंजूर कर ली और निकाह हो गया।

शहजादी को क्या मालूम था कि यह शहज़ादे हैं, अब शहज़ादी शहज़ादे दोनों रोज़ाना एक साथ आराम करते, एक महीने बाद शहज़ादी ने हारून रशीद से

कहा ''मैं उम्मीद से हूँ'' हारून रशीद ने कहा मुबारक हो।

दो महीने बाद ख़लीफा मेहदी का इन्तेक़ाल हो गया और हारून रशीद ख़लीफा हो गये, इस तक़रीब में हारून रशीद एक हफ़्ता शहज़ादी के यहाँ नहीं आये, शहज़ादी को बड़ा रंज हुआ, एक हफ़्ता बाद ख़लीफा हारून रशीद शहज़ादी के पास आये और उससे कहा, मुबारक हो, मैंने अपने को छुपा रखा था मैं ख़लीफा मेहदी का बेटा हूं, उनका इन्तेक़ाल हो गया अब मैं ख़लीफा हारून रशीद हूं, अब तुमको मेरे महल में चलना है।

शहज़ादी ख़लीफा मेहदी शहज़ादा हारून रशीद और उनकी बीवी ज़ुबैदा से ग़ाइबाना पूरी तरह वाक़िफ थी, मैं आपके महल में जा कर बहन ज़ुबैदा को तकलीफ नहीं दूंगी दोनों में तेज़ गुफ़्तगू हुई मगर शहज़ादी महल में जाने को तैयार न हुई, ख़लीफा ने कहा मैं चन्द जवान औरतों का दस्ता भेज कर तुमको उठवा लूंगा, यह कह कर ख़लीफा रवाना हो गये, शहज़ादी आधी रात के अंधेरे में चुपके से घर से निकलीं और अम्मा साबिरा के घर की राह ली। पिछली रात उनके यहां पहुंच गयी, दरवाज़ा खटखटाया, अम्मा साबिरा ने कहा कौन? मैं एक मुसीबत ज़दह आप की पनाह चाहती हूं, अम्मा साबिरा ने देखा एक नौजवान औरत है कहा अहलन व सहलन, शहजादी ने कहा मैं हामिला हूं, अम्मा साबिरा ने कहा कोई हरज नहीं, इस बारे में न तुम कुछ बताओ न मैं कुछ पूछूंगी। शहज़ादी अम्मा साबिरा के साथ उनकी बेटी की तरह रहने लगी।

ख़लीफा हारून रशीद ने मसलहतन शहज़ादी को तलाश नहीं करवाया।

वक़्त पूरा हुआ शहज़ादी के यहाँ लड़के की विलादत हुई, अम्मा साबिरा को बहुत ख़ुशी हुई, लड़के का नाम ''अहमद'' रखा और दोनों की बहुत अच्छी तरबियत की, अम्मा साबिरा सूफी मनुश ख़ातून थीं, उनकी सोहबत से अहमद में भी ज़ुहद व तक़्वा आया, अम्मा साबिरा ने अहमद को अच्छे अख़्लाक़ की तालीम दी और रोज़ी कमाने के लिए मेअ़मारी का काम सिखाया, अहमद मेअ़मारी के काम में बहुत होशियार हो गया।

अल्लाह की मसलहत शहज़ादी बीमार हो गयी और जब हालत खराब होने लगी तो अम्मा साबिरा और अहमद को बुलाया और कहा मैं कुछ बताना चाहती हूं। अम्मा साबिरा समझीं कि अपने गुनाह के बारे में कुछ बतायेगी इसलिए रोका और कहा कुछ न बताओ लेकिन शहज़ादी ने डेग से एक अंगूठी निकाली जिस पर ख़लीफा हारून रशीद का नाम लिखा था, और कहा मेरा निकाह शहजादे हारून रशीद से हुआ था, वह ख़लीफा हुए और मुझे महल में ले जाना चाहा तो मैंने जाने से इन्कार कर दिया, अहमद से कहा कि तुम ख़लीफ़ा के दरबार जाना, यह अंगूठी दिखाना, तुम को वह अपना बेटा मान लेंगे उसके बाद शहज़ादी का इन्तेक़ाल हो गया।

अहमद अपना मेअ़मारी का काम बड़ी मेहनत से करते थे इसलिए उनका

जिस्म सिपाहियाना था मगर मिज़ाज अम्मा साबिरा की सोहतब से ज़ाहिदाना था मां की वफात से बेचारा निढाल हो गया, चार पांच दिन के बाद अम्मा साबिरा के मश्वरे और हुक्म से अहमद बग़दाद में ख़लीफ़ा के महल की तरफ़ रवाना हुआ वहां पहुंच कर मालूम किया कि ख़लीफा से मुलाक़ात कब हो सकती है, मालूम हुआ दरबार के वक़्त मिलने की कोशिश करो, चुनांचि दरबार के वक़्त अहमद पहुंचे और ख़लीफा से मिलने की कोशिश की, दरबारियों ने देखा कि एक नौजवान ख़ूबसूरत और पुरकशिश चेहरा ख़लीफा से मिलना चाहता है, उसका चेहरा ख़लीफा से बहुत कुछ मिलता जुलता था, दरबारियों ने समझा कि ख़लीफा का कोई क़रीबी है मगर अजनबी होने के सबब से रोका, अहमद ने अंगूठी निकाली और कहा मेरे पास ख़लीफा के नाम की अंगूठी है, मुझे मिलने दो, लोगों ने इजाज़त दे दी, अहमद ने ख़लीफा को सलाम किया और अंगूठी दिखाई, खलीफा ने अहमद को गले लगाया और माँ का हाल पूछा, अहमद ने जब माँ की वफात की ख़बर सुनाई तो ख़लीफा के आँसू टपक पड़े, ख़लीफा ने मुसाहिबों से कहा यह मेरा बेटा है, इसको शहज़ादों का लिबास पहनाओ और एक ख़ादिम के साथ शहज़ादों की तरह क़ियाम का इन्तिज़ाम करो, सब बहुत जल्द हो गया, अहमद रोज़ाना दरबार में हाज़िरी देता लेकिन अपनी क़ियामगाह में लिबासे फाख़िरा उतार कर कुर्ता पायजामा या कुर्ता लुंगी में हो जाता, यह बात लोगों को नापसन्द हुई, ख़लीफा से शिकायत की गयी, ख़लीफा कई बार समझाया कि तुम शहज़ादे की शान व शौकत को बाक़ी रखा करो, अहमद अपनी ज़ाहिदाना तबियत के सबब शाही कर्रोफर और शान व शौकत से नाखुश था, एक रात अपनी माँ की तरह शाही महल से ग़ायब हो गया और जंगल की राह ली, जंगल तो बड़ा था मगर उसमें शेर, चीते जैसे दरिन्दे न थे, जंगल के दरमियान उसे एक तालाब या चश्मा मिला जिसमें साफ सुथरा पानी था, वहीं उसने अपने क़ियाम का नज़्म किया।

इधर ख़लीफा ने अहमद को तलाश कराया लेकिन पता न चल सका, अहमद अब हफ़्ते में एक दिन शहर के ऐसे कोने में जाना शुरु किया जहां ख़लीफ़ा को उसकी ख़बर न लग सके, वहां उसने मेअ़मारी का काम शुरु किया, उसके काम में लोगों ने खुली करामत देखी, वह अकेला तीन चार मेअमारों के बराबर काम करता था, लेकिन एक दिन के काम की मज़दूरी से वह हफ़्ते भर के खाने का नज़्म कर लेता, लोग उसके आने का इन्तिज़ार करते, यह सिलसिला काफी दिनों तक चलता रहा, कोई नहीं जानता था यह कहां से आता है और कहां रहता है, अलबत्ता लोग समझते थे कि कोई अल्लाह का वली है, एक दिन काम करके घर लौटा तो एक अक़ीदतमन्द उसके पीछे हो लिया और अहमद की क़ियामगाह तक

पहुंच गया, उजाली रात थी अहमद ने कहा तुम आये नहीं हो अल्लाह ने तुम्हें भेजा है, मेरा आखरी वक्त है, अँगूठी निकाली और दिखा कर कहा मैं ख़लीफ़ा का बेटा हूं मुझे कश्फ से मालूम हुआ मेरा वक़्त करीब है, फिर उस दिन की मज़दूरी निकाली और कहा जब मेरी वफात हो जाये तो इन पैसों से मेरे लिए कफन ले लेना और यहीं दफ़न कर देना, और यह अंगूठी ख़लीफा को पहुंचा देना, उसके बाद कलमा दुरूद के साथ पढ़ा और रूह परवाज़ कर गयी। उस अक़ीदतमन्द को बहुत रंज हुआ मगर वह फौरन शहर आया और दो तीन साथियों को लेकर अहमद के पास पहुंचा, तीनों ने मिल कर क़ब्र खोदी, अहमद को नहलाया, कफन पहनाया, जनाज़े की नमाज़ पढ़ी और दफ़न करके वापस चले गये।

दूसरे दिन वह अक़ीदतमन्द खलीफा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ खलीफा ने अंगूठी देखी तो कहा अहमद कहाँ है, उसने जवाब दिया वह तो अल्लाह को प्यारे हो गये, खलीफा के आँसू टपकने लगे और पूछा क्या तुम उसकी कब्र जानते हो, कहा हाँ, ख़लीफा ने कहा किसी दिन तनहाई में मुझे क़ब्र तक पहुंचा दो चुनांचि इस पर अमल हुआ, ख़लीफा क़ब्र पर पहुंच कर फातिहा पढ़ी और वापस आ गया।

**नोटः** क़िस्से में ह़ज़्फ व इज़ाफ़ा हुआ है मगर क़िस्से की रूह़ मौजूद है।

❖❖❖

**तम्बाकू नोशी .....**

वह इस घातक बीमारी से न सिर्फ उम्मत के नौजवानों के लिए बल्कि हमारी सोसाइटी के तमाम अफराद के लिए इबरत का सामान फराहम करे और बुरी आदत से बाज़ रखने में इस का क़िरदार निहायत अहम और आम हो।

ख़ुशी की बात है कि समाज में मुख़्तलिफ़ सतहों पर इस वबा के तेईं बेदारी आ रही है, और सराहत के साथ कहा जा रहा है कि इस जान लेवा मरज़ से इंसानियत अपने और मुआशरा को महफूज़ रखे।

❖❖❖

**प्यारे नबी की प्यारी .....**

दूर फरमा देगा और हर ग़म से उसको बचा लेगा और उसको रोज़ी ऐसी जगह से अता फरमायेगा जहां से उसको ख्याल भी न होगा।

(अबूदाऊद–तिर्मीज़ी)

हज़रत अबू मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसने यह पढ़ लिया, अनुवादः–

''मैं उस अल्लाह से मगफिरत चाहता हूं कि जिसके अलावा कोई माबूद नहीं और वह ज़िन्दा है क़ायम रहने वाला है और उसी की तरफ़ तौबा करने वाला हूँ'' तो उसके गुनाह बख्श दिये जायेंगे अगरचे वह कुफ्फार की लड़ाई से पीठ मोड़ कर ही भागा हो। अर्थात लड़ाई के वक़्त पीठ मोड़ कर भागना बड़े गुनाहों में शामिल है लेकिन वह भी माफ हो जायेगा।

❖❖❖

# आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

***प्रश्नः*** स्टाक एक्सचेंज बाज़ार में ख़रीद व फ़रोख़्त के लिए वास्ता बनने वाले ''ब्रोकर'' कहलाते हैं, जो मौजूदा वक़्त में शेयरों की ख़रीद व फ़रोख़्त और क़ीमतों से वाक़फ़ियत रखता है और ख़रीद व फ़रोख़्त की कारवाई का इंदिराज करता है, यानी इसकी हैसियत एजेंट की है, इसका क्या हुक्म होगा यानी क्या ''ब्रोकर''' की हैसियत से काम करना दुरुस्त है?

***उत्तरः*** जाइज़ और हलाल करोबार पर मबनी कम्पनियों के शेयरों की ख़रीद व फ़रोख़्त में ''ब्रोकर'' बनना और उजरत हासिल करना जाइज़ है, ऐसे ही दरमियानी लोगों को फुक़्हा ''दलाल'' से ताबीर करते हैं।

(रद्दुल मोहतार 4/46)

***प्रश्नः*** क्या सूद की रकम रिफाही कामों मसलन महल्ला की नाली दुरुस्तगी, सड़क के किनारे बैतुलख़ला की तामीर या मदरसा व क़ब्रिस्तान की चहार दिवारी में लगाना दुरुस्त है?

***उत्तरः*** सूदी रक़म रिफाही कामों में लगाई जा सकती है या नहीं? इस बारे में अहले फिक़्ह व फतावा की राय मुख़्तलिफ़ है, बाज़ अहले इल्म इसकी इजाज़त देते हैं लेकिन आम तौर पर उलमा की राय अदम जवाज़ की है, एहतियात इसी में है कि रक़म से रिफाही काम न किये जायें, बल्कि उसे बिला नीयत सवाब ज़रूरतमन्दों पर सर्फ कर दिया जाए।

***प्रश्नः*** जो लोग गरीब हैं, उनको कपड़ों और दीगर बुन्यादी ज़रूरतों के लिए अगर क़र्ज लेना पड़ा और उसकी अदाइगी की कोई सबील न हो तो क्या सूद की रक़म से गरीबों के क़र्ज़ की अदाएगी दुरुस्त है?

***उत्तरः*** सूदी रक़म के बारे में अस्ल क़ायदा तो यही है कि उसे अस्ल मालिक को वापस कर दिया जाए लेकिन अगर मालिक न हो तो बिलानीयत सवाब फुक़रा व मसाकीन पर सदक़ा कर दिया जाए, अगर किसी गरीब ने क़र्ज़ ले लिया है तो उसे यह रक़म दी जा सकती है, और वह उससे क़र्ज़ अदा कर सकते हैं असलन यह रक़म गरीब को देना है जिसकी इजाज़त है।

***प्रश्नः*** एक शख़्स के पास सूदी रक़म आ गई है, इसके भाई भतीजे इंतिहाई मजबूर व गरीब हैं क्या उनको यह रक़म दी जा सकती है?

***उत्तरः*** चूंकि यह लोग गरीब हैं इसलिए उनको यह रक़म दी जा सकती है और मक़सूद गुरबा को देना है।

***प्रश्नः*** सूदी रक़म क्या गैर मुस्लिम ज़रूरतमन्दों को दी जा सकती है या सिर्फ मुसलमान ज़रूरतमन्द गरीब ही को देना ज़रूरी है?

***उत्तरः*** सूदी रक़म गैरमुस्लिम गरीब को भी दी जा सकती है, अलबत्ता मुसलमान फक़ीर को देना औला है कि इससे इन का तआ़वुन भी होगा, गो सवाब की नीयत नहीं की जायेगी।

***प्रश्नः*** एक शख़्स के पास दूसरे की रक़म नाजाइज़ तौर पर आ गई, उसने अपने कारोबार में उस रक़म को भी लगा दिया और उससे

नफ़ा हासिल हुआ, क्या माले हराम के ज़रीए हासिल शुदा नफ़ा दुरुस्त है?

***उत्तरः*** आमतौर पर फुक़हा की राय यही है कि माले हराम से कारोबार करके जो नफ़ा कमाया जाए वह नफ़ा जाइज़ नहीं है लेकिन इमाम अबुल हसन करखी रह0 ने इस नफा को इस सूरत में जाइज़ करार दिया है जब्कि ग़लती से या उस माल की तरफ इशारा किये बगैर दूसरी चीज़ ख़रीद ली और उसमें नफा हुआ, बिल इरादा माल हराम के ज़रीआ कमाई करना तमाम फुक्हा के नज़दीक हराम है।

(अद्दुर्रुल मुख़्तारः 5/235)

***प्रश्नः*** एक शख़्स के पास कुछ ज़रूरतमन्द तआ़वुन के लिए आये, उन्होंने बैंक में मौजूद सूदी रक़म के इरादा से अपनी हलाल रक़म अदा कर दी और यह ख़याल किया कि सूदी रक़म के एवज़ में दे रहा हूं और बैंक से सूदी रक़म लेकर अपने मसरफ में ख़र्च करेगा, क्या सूदी रक़म के बदले हलाल रक़म अदा कर देने से सूद से यह शख़्स बरी हो जाएगा?

***उत्तरः*** बेहतर यह है कि जो रक़म सूदी हो उसी मुअ़य्यन रक़म को सदक़ा करे, लेकिन अगर सूदी रक़म की जगह दूसरी रक़म ज़िम्मा से फारिग होने के लिए सदका करे तो यह ज़िम्मा से फारिग हो जाएगा।

(अद्दुर्रुल मुखतारः 2/290)

***प्रश्नः*** अगर कोई शख़्स सूदी रक़म से कोई चीज़ ख़रीद कर ज़रूरमन्द को दे दे, मसलन सिलाई मशीन खरीद कर किसी गरीब ख़ातून को दे दे तो क्या यह दुरुस्त है? क्या इस सूद का सदका करना होगा या नहीं?

***उत्तरः*** फुक्हा ने इस बारे में जो बातें लिखी हैं, उनसे मालूम होता है कि माले हराम अस्ल मालिक को लौटाया जाए, अगर यह मुमकिन न हो तो बऐनेही वह चीज़ या माल सदक़ा कर दिया जाए, इसको तब्दील करना दुरुस्त नहीं, लिहाज़ा सामान ख़रीद कर देने से सूदी रक़म सदक़ा करना नहीं हुआ, बल्कि ज़िम्मा में वाजिबुल अदा रह गया।

(रद्दुलमुहतारः 5/169)

❖❖❖

**धर्म और ज्ञान.....**

शास्त्र की जानकारी ने इन शास्त्रों के अध्ययन की ओर आकृष्ट किया। मुहम्मद सल्ल0 के द्वारा दुन्या को जो 'वही' मिली उसमें आकाशीय पिण्डों के घूमने का उल्लेख उनकी उपासना के लिए नहीं बल्कि अल्लाह की निशानी और मनुष्य की सेवा के रूप में किया गया है। मुसलमानों ने खगोल शास्त्र का सफलता पूर्वक अध्ययन किया। शताब्दियों तक वही इस शास्त्र के शास्त्री रहे और आज भी अधिकांश सितारों के अरबी नाम और सम्बन्धित शब्दावली का प्रयोग होता है। योरोप में मध्य युग के खगोल विद्या शास्त्री अरबों के शिष्य थे।

इसी प्रकार कुर्आन ने चिकित्सा शास्त्र के ज्ञनार्जन को प्रोत्साहित किया और सामान्यताः प्रकृति के अध्ययन और चिन्तन की ओर ध्यान आकृष्ट किया।

❖❖❖

—पिछले अंक से आगे.....

# घरेलू मसायल

—मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0 —अनुवादकः मौलाना मु0 जुबैर अहमद नदवी

**महर कितना होना चाहिएः—**

यूँ तो शादी के सारे चरणों में नबी—ए—अकरम (स०) का यह सुनहरा इरशाद सामने रहना चाहिए। ''सबसे बरकत वाली और भाग्यशाली शादी वह है जिस में आर्थिक बोझ कम से कम हो और कठिनाइयों में न पड़ना पड़े'। (मिश्कात जिल्द 2, पृष्ठ : 268)

खासतौर पर महर के बारे में इस पर जरूर अमल होना चाहिए, हज़रत उमर (रजि०) अपने एक खुत्बे के अंदर बहुत ही प्रभावी अंदाज में शरीयत की रूह (आत्मा) बयां कर दी है, आपने फरमाया :—

"कान खोल कर सुन लो ! औरतों के महर ज़ियादा ना बाँधा करो अगर यह दुन्या में इज़्ज़त की बात, या अल्लाह के नजदीक अच्छी चीज होती तो अल्लाह के नबी (स०) जरूर ऐसा करते"। (अबू दाऊद जिल्द 1, पृष्ठः 287)

शरीयत ने महर औरत पर नहीं बल्कि मर्द पर अनिवार्य किया क्योंकि औरत की इज़्ज़त और उसकी लिंगीय कोमलता इस बात की मांग करती है कि उसको तलाश किया जाए ना कि वह खुद पति को तलाश करे, महर का मर्द पर अनिवार्य होना इस बात का व्यावहारिक सबूत है कि वह खुद बीवी तलाश करने वाला है, और दूसरी बात कि इस में औरत की खुशी का खयाल भी है। यद्यपि आप (स०) ने महर की कोई ऐसी आख़िरी हद निर्धारित नहीं फरमाई जिस के बाद इजाजत नहीं रहती हो (लेकिन कम से कम महर की मात्रा दस दिरहम, लगभग 30 ग्राम चांदी निर्धारित है) लेकिन हदीसों से पता चलता है कि बस इतना महर निर्धारित होना चाहिए जो आसानी से अदा किया जा सकता हो, और उसका कुछ हिस्सा यौन संबंध बनाने से पहले ही अदा करना औरत की खुशी का साधन है, नबी—ए—अकरम (स०) ने अपनी अक्सर बीवियों का महर 500 दिरहम लगभग 1500 ग्राम चांदी निर्धारित किया (बीवियों में सिर्फ हज़रत उम्मे हबीबा (रजि०) का महर 4000 दिरहम निर्धारित था जो हुजूर (स०) ने नहीं बल्कि असमह नज्जाशी (रजि०) (हबश के राजा) ने हुजूर (स०) की तरफ़ से अदा किया था) और 500 दिरहम ही महर अपनी बेटियों का निर्धारित किया, नबी—ए—अकरम (स०) के इस कार्य—शैली से जिस तरह यह बात मालूम हुई कि महर की मात्रा इतनी ज़ियादा नहीं निर्धारित करना चहिये कि अदा करना ही मुश्किल हो जाए इसी तरह यह भी पता चला कि महर इतना कम भी नहीं होना चाहिए जिससे औरत की तुच्छता बल्कि बेक़ीमती का एहसास होने लगे इस बारे में भी अक्सर लोग अतिवाद के शिकार हो जाते हैं, कि या तो इतना ज़ियादा महर निर्धारित करना गर्व का कारण समझते हैं, जिसका अदा करना मुश्किल ही नहीं

बल्कि कभी कभी असंभव होता है, या इतनी मात्रा कुछ समुदायों और परिवारों के लोग निर्धारित करते हैं कि सुन कर हंसी आ जाए और औरत का खुला अपमान महसूस हो। शरीयत ने इस बारे में भी संतुलित रास्ता पसंद किया। और उस पर चलना बेहतर बताया कि वह ना बहुत ज़ियादा हो और ना औरत की हैसियत से इतना कम हो उसे अपने जैसे लोगों में लज्जित होना पड़े, उस ज़माने में खरीदने की क्षमता के लेहाज से दिरहम की जो आर्थिक मूल्य थी कि 5 दिरहम में आम तौर पर एक अच्छी बकरी आ जाती थी जो आज (2008 ई०) कम से कम दो हज़ार में आएगी। इस एतेबार से पांच सौ दिरहम की मालियत बहुत हुई।

**हजरत फातिमा के महर की सही मात्राः–**

हज़रत फातिमा का महर चार सौ मिस्काल चांदी निर्धारित किया गया था जिसका वजन लगभग 150 तोले होता है और इस ज़माने के वजन के एतेबार से सत्रह सौ ग्राम बनता है, हज़रत फातिमा के महर की यह मात्रा हजरत थानवी (रह०) ने भी बताई है। देखिये बहिश्ती जेवर जिल्द 6 पृष्ठः 42 मक्तबा थानवी देवबंद, इस्लाहुर्रूसूम, पृष्ठः 91, और ज़रक़ानी, जिल्दः 2, पृष्ठः 6 (मतबअह अजहरिय्या संह० 1345 हिज्री)।

इसके अलावा महर ''हज़रत फातिमा रज़ि0 का चार सौ मिस्काल नक़रह होना'' बताया है।

**निकाह का सुन्नत तरीक़ा और खुत्बे की हिक्मतः–**

शरीयत में निकाह का तरीक़ा भी बहुत थोड़ा और सादा रखा गया है। जरूरी काम तो सिर्फ ईजाब व कबूल लेकिन सुन्नत तरीका यह है कि शुरू में खुत्बा भी पढ़ा जाए निकाह के खुत्बे का रिवाज हुजूर स० के नबी बनाए जाने से पहले से मिलता है अतः हुजूर स० के पहले निकाह के वक़्त जो हज़रत ख़दीजा से हुआ था) आप (स०) के चचा हज़रत अबू तालिब ने बड़ा प्रभावशाली खुत्बा दिया था जिस के एक हिस्से का जिक्र तफ़्सीरे कश्शाफ सुर–ए–आले इमरान की आयत के अंतर्गत मिलता है) जिस में खासतौर से दोनों की बेहतर जिन्दगी गुजारने की नसीहतें और ख़ुदा के खौफ़ का मजमून होना चाहिए क्यों कि मियां बीवी का तअल्लुक खुदा के खौफ के बगैर सही क़ायम रहना बहुत मुश्किल है क्योंकि इसमें एक पक्ष (औरत) स्वाभाविक रूप से कमज़ोर होता है और कमज़ोर को देना खुदा के ख़ौफ के बिना किसी और वजह से आमतौर पर मुश्किल ही होता है फिर मियां बीवी के अक्सर मामले ऐसे होते हैं जिनका करीबी दोस्तों सम्बन्धियों के भी सामने लाना अनुचित समझा जाता है अदालत जाना तो दूर की बात, शायद इसी वजह से सुन्नत खुत्बे में जो तीन आयतें पढ़ी जाती हैं उन सब में तकवे का मजमून है उन में पहली आयत (सुर–ए–निसा) के अंदर यह भी सार कर दिया गया है कि मियां बीवी में से किसी एक को भी इंसानी लेहाज से बरतरी (श्रेष्टता) हासिल नहीं क्योंकि दोनों एक (आदम)

शेष पृष्ठ .....40....पर

# नदवतुल उलमा के दो बड़े ज़िम्मेदारों का इन्तिक़ाल

—इदारा

''सच्चा राही'' के पाठकों को दुख और अफ़सोस के साथ ख़बर दे रहा हूं कि रमज़ान के इस मुबारक महीने में नायब नाज़िम नदवतुल उलमा मौलाना मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी का 7 मई, 2021 और मोतमदे माल जनाब अतहर हुसैन ख़ालिदी का 6 मई, 2021 को चन्द महीने की बीमारी के बाद इन्तिक़ाल हो गया ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'' (हम सब अल्लाह ही के हैं और उसी के ओर पलट कर जाने वाले हैं) मौलाना हमज़ा हसनी नदवी इल्मी व दीनी खानदान के चश्म व चराग़ और एक नामवर आलिमे दीन और अहले दिल बुज़ुर्ग मौलाना मुहम्मद सानी हसनी नदवी के इकलौते बेटे और वर्तमान नाज़िम नदवतुल उलमा मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी के भतीजे और दामाद थे, भूतपूर्व नाएब नाज़िम नदवतुल उलमा क़ाज़ी मौलाना मुईनुल्लाह नदवी रह0 के इन्तिक़ाल के बाद मौलाना हमज़ा हसनी नदवी नाज़िरे आम हुए और पूरी ज़िम्मेदारी के साथ अपने कर्तव्यों को अनजाम दिया, अल्लाह ने मरहूम को बड़ी सूझ बूझ प्रदान की थी, उन्होंने हमेशा नदवे के मफ़ाद को पेशे नज़र रखा, उनको विरासत में अपने बड़े नाना डॉक्टर अब्दुल अली हसनी और छोटे नाना मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली नदवी से नदवी मिज़ाज और नदवी फ़िक्र मिली थी, शहर लखनऊ के इल्मी, दीनी सियासी हलक़ों में उनको इज्जत और महब्बत की नज़र से देखा जाता था। जो उनसे मिलता प्रभावित होता, उनको इन्सानों की परख का बड़ा मलका हासिल था, वर्तमान काल में नदवे को उनकी बड़ी ज़रूरत थी, परन्तु अल्लाह की मशीअत और हिकमत को कौन जाने, अल्लाह उनके दरजात को बलन्द फ़रमाये और जन्नतुल फ़िरदौस में आला मुक़ाम अता फ़रमाये।

*आसमां उसकी लहद पे शबनम अफ़शानी करे*
*सबज़ए नौरस्ता उस घर की निगहबानी करे*

मोतमदे माल जनाब अतहर हुसैन ख़ालिदी रह0 ने अगरचि कालेज और यूनिवर्सिटी की तालीम पाई थी, लेकिन घरेलू तालीम और तरबियत दीनी थी, शुरु से हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली नदवी रह0 से अक़ीदत और महब्बत थी इसके अलावा नदवे के सभी बड़े असातिज़ा से उनका सम्बन्ध था, मौलाना मुहम्मदुल हसनी नदवी भूतपूर्व चीफ़ एडीटर अरबी पत्रिका ''अल बअ़सुल इस्लामी'' से उनको विशेष लगाव था। उनके दीनी प्रोग्रामों और योजनाओं में बराबर सहयोग देने का प्रयत्न करते, हिन्दी भाषा के अच्छे विद्वान और हिन्दू धर्म के ज्ञानी थे, हर अच्छी किताब का अध्ययन उनकी विशेष रुचि थी जिसकी वजह से उनके घर पर क़ीमती किताबों की लाइब्रेरी तैयार हो गई, अपने सभी बच्चों को उन्होंने हाफ़िज़े कुर्आन और आलिम बनाया। अमीरुद्दौला इस्लामिया कालेज जहां वह प्रिन्सपल और लेक्चरर थे, रिटायर्मेन्ट के बाद पूरा समय उन्होंने नदवे को दिया, मोतमद माल और अध्यापक के रूप में जनाब अतहर हुसैन ख़ालिदी रह0 ने दारुल उलूम नदवतुल उलमा की सेवा की, नदवे के निःस्वार्थ सेवकों और सम्बन्धियों में सदैव उनको याद किया जायेगा। अल्लाह तआला मरहूम पर अपनी रहमतें और बरकतें नाज़िल फ़रमाये। आमीन! ◆◇◆

# हज़रत मूसा और हज़रत ख़िज़्र अलै० की आशाजनक भेंट

—पवित्र कुर्आन

और (आद और समूद वगैरः) यह बस्तियाँ (जिनके निशान तुम देखते हो) इन्होंने भी जब जुल्म किये तो हमने उनको मिटा दिया और इनको मिटा देने की भी हमने एक मीआद नियुक्त कर रखी थी। (51)

और ऐ पैम्बर! लोगों को बतलाओ कि जब मूसा अलै0 हज़रत खिज्र की मुलाक़ात के इरादे से चले तो उन्होंने अपने सेवक ह0 यूश अलै0 से कहा कि जब तक मैं दोनों नदियों के मिलने की जगह पर न पहुंच लूं, बराबर चलूंगा चाहे मैं बरसहा बरस चलता ही रहूँ।(60) फिर जब ये उन दोनों नदियों के मिलने की जगह पर पहुंचे तो वे अपनी तली हुई मछली भूल गये, और उस मछली ने नदी में सुरंग की तरह अपना रास्ता बना लिया। (61) फिर जब आगे बढ़े तो मूसा अलै0 ने अपने सेवक से कहा कि हमारा खाना तो हम को दो। हमारे इस सफ़र में तो हम को बड़ी थकावट हुई है। (62) नौकर ने कहा आपने यह देखा था कि जब उस पत्थर के पास हम लोग ठहरे थे तो मछली वहीं भूल गया और शैतान ही मरदूद ने मुझको भुला दिया कि मैं आपसे उसका जिक्र करता, और उस मछली ने अजीब तौर पर नदी में जाने का अपना रास्ता कर लिया। (63) मूसा अलै0 ने कहा कि वही वह जगह है जिसकी हम तलाश में थे। फिर दोनों अपने पैरों के निशानों को खोजते उलटे पांव फिरे। (64) तो उन्होंने बन्दों में से एक बन्दे यानी ह0 खिज्र अलै0 को वहां पाया, जिस पर हमने अपनी मेहरबानी की थी और अपनी तरफ़ से उसको एक इल्म सिखाया था। (65) मूसा ने उससे (यानी खिज्र अलै0 से) कहा कि क्या मैं तुम्हारे साथ इस इरादे से रह सकता हूं कि जो इल्म तुमको सिखाया गया है तुम उसमें से कुछ भलाई मुझको भी सिखा दो। (66) खिज्र अलै0 ने कहा तू मेरे साथ न ठहर सकेगा। (67) और जो चीज़ तेरी जानकारी के घेरे से बाहर है उस पर तू सब्र कर भी कैसे सकेगा? (68) मूसा अलै0 ने कहा अल्लाह ने चाहा तो तुम मुझको सब्र करने वाला पाओगे और मैं तुम्हारी किसी आज्ञा को न टालूंगा। (69) खिज्र अलै0 ने कहा अगर तुझको मेरे साथ रहना है तो ध्यान रख कि जब तक मैं तुझ से किसी बात की चर्चा खुद न करूँ तू मुझ से कोई सवाल न करना। (70)

फिर मूसा अलै0 और खिज्र अलै0 दोनों चले, यहां तक कि नदी पड़ने पर जब दोनों नाव में सवार हुए तो खिज्र ने एक तख़्ता तोड़ कर नाव को फाड़ दिया। मूसा अलै0 ने कहा कि तुमने क्या कश्ती को इसलिए फाड़ा कि नाव के लोगों को दरिया में डुबो दो। क्या ही बड़ी खतरे की बात तुमने की (71) खिज्र ने कहा आखिर वही हुआ मैंने कहा न था कि तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा। (72) मूसा अलै0 ने

कहा कि तुम मेरी भूल चूक न पकड़ो और मेरे मामले में इतनी सख़्ती से काम न लो। (73) फिर दोनों और बढ़े यहां तक कि रास्ते में एक लड़के से भेंट हुई तो खिज्र अलै0 ने उसको मार डाला। मूसा अलै0 ने कहा क्या एक बेक़सूर शख्स को तुमने नाहक मार डाला? वह भी किसी के क़त्ल के जुम्र के क़िसास यानी बदले में नहीं! यह तो तुमन बडा बेजा काम किया। (74) खिज्र अलै0 ने कहा क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मेरे साथ तुम बिना टोके या पूछे सब्र नहीं कर सकोगे। (75) मूसा अलै0 ने अपनी भूल समझते हुए कहा कि इसके बाद अगर मैं तुमसे फिर कुछ पूछूं तो मुझको अपने साथ न रखना। अब मेरी ओर से तुम पूरी तरह उज्र को पहुंच चुके हो अब मुझको आइन्दा उज्र करने की गुंजाइश न रहेगी। (76) फिर दोनों आगे बढ़े यहां तक कि एक गांव वालों के पास पहुंचे और वहां के लागों से खाने को मांगा, लेकिन उन्होंने उनकी मेहमानी करने से इन्कार कर दिया, फिर इतने में इन्होंने वहां एक दीवार देखी जो गिरा चाहती थी, तो खिज्र अलै0 ने उसको सीधा कर दिया। इस पर मूसा अलै0 ने कहा अगर तुम चाहते तो दीवार के सीधा करने की मजदूरी ले सकते थे। क्योंकि इन्होंने हम लोगों को खाना तक नहीं दिया। (77) तीसरी बार फिर मूसा अलै0 के टोक देने पर खिज्र अलै0 ने कहा बस अब मेरा तेरा साथ नहीं रह सकता और मुझ में और तुझमें जुदाई है, जिन बातों पर तू सब्र न कर सकता अब मैं तुझको उनकी असलियत बताये देता हूँ। (78) कि नाव तो गरीबों की थी जो नदी में चलाते व पेट पालते थे और उनके सामने की तरफ़ एक ज़ालिम बादशाह था जो हर एक कश्ती को जबरन ज़ब्त कर लिया करता था, तो मैंने चाहा कि उस नाव को ऐबदार कर दूं। और वह नाव बेकार से बच जाय। (79) और वह जो लड़का था उसके माता–पिता ईमान वाले थे, तो हमको यह डर हुआ कि यह लड़का सयाना होने पर बदकिरदार होगा और वह सरकशी और कुफ़्र से उन पर बला न डाले। (80) इसलिए हमने यह चाहा कि उसको मार दें और उनका परवरदिगार उसके बदले में और बेटा दे जो उससे ज़ियादा पाक और महब्बत वाला हो (81) और रही दीवार, सो शहर के अनाथ लड़कों की थी और उसके नीचे उन्हीं लड़कों का खज़ाना गड़ा हुआ था, और उनका पिता एक नेक आदमी था। पस तुम्हारे परवरदिगार ने चाहा कि वह लड़के अपनी जवानी को पहुंच कर अपना गड़ा हुआ खज़ाना निकाल लें। तुम्हारे परवरदिगार की यह कृपा थी। और मैंने जो कुछ किया सो अपने इख़्तियार से नहीं किया बल्कि अल्लाह की आज्ञा से। यह उन बातों का राज़ है जिन पर तुम सब्र न कर सके। (82)

और ऐ पैगम्बर! लोग तुमसे तुम्हारे इल्म और नबी होने का इम्तिहान लेने के लिए अब जुल्करनैन का हाल पूछते हैं। तुम कहो कि मैं तुमको उसका थोड़ा सा हाल पढ़ कर सुनाता हूं। (83)

**शेष पृष्ठ .....33....पर**

# इतिहास के झरोके से

## राजा विक्रम जीत सिंह

विक्रमजीत राजपूत ख़ानदान का एक बहुत बड़ा राजा हुआ है, अगरचि उसके ज़माने को दो हज़ार वर्ष से ज़ियादा हुए मगर हिन्दुसतान की ऊँची क़ौमों में उसका नाम ज़िन्दा है, उज्जैन जो मालवा की सरज़मीन में अब भी एक प्रसिद्ध और पिरचित नगर है उसकी राजधानी था। बुद्धिमानी न्याय और बहादुरी में यह राजा सर्वश्रेष्ठ गिना जाता है, उसने फ़क़ीराना भेस बदल कर बहुत दिनों तक भ्रमण और यात्रा की, विदेश वालों के इल्म व हुनर और बुद्धि व ज्ञान को खूब देखा भाला, पचास वर्ष की आयु में देश का शासन संभाला, मालवा और गुजरात का क्षेत्र कुछ महीनों में प्राप्त कर लिया और बहुत थोड़े समय में हिन्द का महाराजा बन गया।

राजा विक्रमजीत का दरबार तो बड़ी शान व शौकत का था मगर उसकी गुज़र बसर का तरीक़ा ऐसा सीधा सादा था जैसा दरवेशों और संयमों का होता है वह एक बोरे पर सोता और पानी की एक ठेलिया के अलावा कुछ सामान अपने मकान में न रखता।

इस ज्ञानी और गुणी राजा की सभा में बड़े–बड़े विद्वान पण्डित और कवि सम्मिलित थे, जो उसकी सभा के नौरत्न कहलाते थे। काली दास जो हिन्दुस्तान का नामवर कवि हुआ है, वह भी उस राजा की सभा का एक रतन था, इन्साफ़ और बहादुरी से जो ख्याति शोहरत राजा को प्राप्त हुई विधा का समर्थन और पंडितों के आदर ने उसको और भी चमका दिया। राजा ने अपनी क़ौम के दुश्मनों पर बड़ी विजय प्राप्त की, इसलिए उसका ज़माना बड़ा मुबारक समझा गया और उसी से सम्बती वर्ष प्रारम्भ हुआ। आज तक हमारे देश में उस संवत का रीति रिवाज मौजूद है। बही खातों में, पत्रों और बहुत काग़ज़ों में वह संवत लिखा जाता है। ईस्वी सन् से उसमें सत्तावन (57) साल की ज़ियादती है।

अब तुम सोचो कि ऐसा बड़ा राजा किस मामूली और थोड़े सामान से ज़िन्दगी बसर करता था, निःसंदेह इनसान को गुज़ारा व जीवन यापन के लिए बहुत थोड़ा सामान काफी है, लेकिन ऐश व आराम की हवस तरह तरह के फजूल सामान जमा कराती है और जब किसी चीज़ की आदमी को आदत हो जाती है तो वह चीज़ ज़रूरी बन जाती है फिर उसमें कुछ मज़ा नहीं आता, उस वक़्त इनसान को दूसरी चीज़ों की तलब होती है, ग़रज़ जितना ऐश का सामान बढ़ता है उसी क़दर ख़्वाहिश को तरक़्क़ी हो जाती है और वह कमी पूरी नहीं हो सकती। ◆◇◆

# सौंफ

—प्रस्तुतिः राशिदा नूरी

**दूसरे नामः**

सौंफ (जिसको सूँफ भी कहा जाता है) इसको बंगाली में मौरी, मराठी में शौफ, गुजराती मे बरयाई, कर्नाटकी में काँस्छ सिगे और तमिल में सोही किरे कहते हैं।

सौंफ मेदे की कमज़ोरी को दूर कर देती है और रियाह को निकालती है पेशाब लाती और दूध को बढ़ाती है बीनाई की कमज़ोरी को दूर करने के लिए बड़ी मुफ़ीद है इस मर्ज़ के लिए खाई भी जाती है और उसके पानी में सरसों को ख़ुरल करके आँखों में भी लगाया जाता है। मेदे की ख़राबी से बुख़ार आता हो तो उसके लिए भी मुफ़ीद है।

सौंफ 6 माशे को पानी में हलका जोश दे कर पिलाने से बच्चों के पेट के रियाह और बदहज़मी दूर हो जाती है।

सौंफ और धनिया बराबर बराबर लेकर कूट छान कर सफूफ़ बनाएं फिर दोनों के बराबर खाँड मिला कर रख छोड़े। खाना खाने के बाद 9—9 माशे ये सफूफ़ खाएं खाना खाने के बाद तबीअ़त भारी हो जाती हो या हाथ पैर जलने लगते हों तो उसके इस्तेमाल से बहुत फायदा होता है। सिर्फ सौंफ़ का सफूफ़ भी रोज़ाना सुब्ह को 6 माशे खाएं तो ये मेदे को ताक़त देने और बीनाई को बढ़ाने के लिए अच्छी दवा है।

सौंफ को घी में भून कर पीस लें और उसके साथ थोड़ी सी खाण्ड मिलाएं 9—9 माशा सुब्ह शाम खायें इससे दस्त बन्द हो जाएंगे, अगर उसके कसाथ बराबर वज़न बेल गिरी मिला कर इस्तेमाल किया जाये तो दस्तों के लिए बहुत अच्छी दवा हो जायेगी।

सुरमा खालीस पाँच तोला ले कर पाँच तोला लेकर एक हफ़्ते तक हरी सौंफ के पत्तों के रस में सरल करें जब ख़ुशक हो जाए तो छान कर रखें और सुब्ह शाम सलाई से आँखों में लगाया करें। बीनाई की कमज़ोरी में मुफ़ीद है अगर हरी सौंफ न मिले तो सौंफ के जोश दिये हुए पानी में खिरल करें।

❖❖❖

**हज़रत मूसा और .....**

हमने उसको ज़मीन पर सामर्थ्यवान किया और हमने उसको हर तरह के साज़ व सामान दिये थे। (84) फिर वह एक सामान के पीछे पड़ा और पश्चिम की ओर कूच किया। (85) यहां तक कि जब सूरज के डूबने की जगह पहुंचा तो उसको सूरज ऐसा दिखाई दिया कि वह काले गन्दे पानी में डूब रहा है और देखा कि उसके क़रीब एक जाति बसी है। हमने कहा कि ऐ जुल्क़रनैन! तुम्हें अधिकार है चाहो इन लोगों को सज़ा दो, चाहो इनके साथ नेक सुलूक करो। (86)

❖❖❖

# सोशल मीडिया का संक्षिप्त परिचय

—इंज़िमामुल हक़ नदवी
अनुवादः नोमान जौरासी

## फेसबुक क्या है?

फेसबुक एक सामाजिक नेटवर्किंग सेवा है जिसका आरम्भ 2004 में हार्वड यूनिवर्सिटी के छात्र मार्क ज़करबर्ग ने यूनिवर्सिटी के छात्रों के लिए किया जिसे बाद में 13 साल या उससे ज़ायद वर्ष के तमाम लोगों के लिए उपलब्ध करा दिया गया। मई 2012 के आँकड़ों की संख्या 900 मिलियन है जिसमें दिन प्रतिदिन बढ़ोत्तरी हो रही है। उपयोग करने वालों में आधे फेसबुक को मोबाईल उपकरणों (स्मार्ट मोबाईल फोन, टेबलेट, कम्प्यूटर आदि) पर उपयोग करते हैं। फेसबुक उपयोगकर्ता एक दूसरे से सम्बन्ध (कनेक्शन) अपनी पसंद की चीज़ें (फोटो, पत्र, वीडियो, ऑडियो) को दूसरे लोगों से शेयर करने और अपने रुचि के समूह का हिस्सा बनने की सुविधा प्रदान करता है। दुन्या भर में मित्रों से राबता करना, अपने मित्रों और फैमली से तस्वीरें साझा करना, पुराने मित्रों और सहपाठियों से राबता करना, फेसबुक की भिन्न एप्लीकेशन्स का प्रयोग, किसी खास मौक़े पर मित्रों को आमंत्रित करना, वर्ल्ड वाइड वेब पर फेसबुक सोशल प्लगइन्स के ज़रिए सम्बन्धें को बढ़ावा देना, खेलों से आनंदित होना, ऑनलाइन दोस्तों से बातचीत, खुद को या अपने कारोबार को फेसबुक पेजेज के जरिए तरक्की देना। यहां फेसबुक के अहम विशेषताओं को बनाने की कोशिश करता हूँ। स्टेटस अपडेट वास्तव में वह संदेश है जिन्हें फेसबुक पर दोस्तों से साझा किया जाता है। इन स्टेटस पर लोग टिप्पणी करके अपनी राय प्रकट करते हैं और लाइक पर क्लिक करके अपनी पसंद प्रकट करते हैं। किसी भी उपयोगकर्ता का स्टेटस उसकी टाइमलाइन पर सबसे ऊपर नज़र आता है। स्टेटस अपडेट का बुन्यादी उद्देश्य दूसरे उपयोगकर्ताओं को अपने वर्तमान के हाल, भावना, किसी ख़ास जगह पर मौजूदगी या किसी ख़ास कार्य के बारे में सूचित करना है। इस स्टेटस को शब्दों, तस्वीरों और वीडियोज़ की सूरत में अपडेट किया जा सकता है। इसके अलावा उपयोगकर्ता अपने स्टेटस की प्राइवेसी को भी कंट्रोल कर सकता है कि वह किन लोगों से स्टेटस साझा करना चाहता है। मैसेज चैट इंटरनेट पर वार्ता करने या संदेश भेजने का जरिया है। फेसबुक में चैट के लिए सबसे नीचे दायें तरफ़ चैट का ऑपशन मौजूद है। इस पर क्लिक करते ही आपकी मित्र सूची में शामिल सारे ऑनलाइन लोगों की सूची

सामने आ जाती है। इस लिस्ट में से वांछनीय व्यक्ति के नाम पर क्लिक करने से नीचे ही एक छोटी सी विंडो सामने आ जाती है जिसके ज़रिये उस व्यक्ति को संदेश भेजा जा सकता है। यह तमाम वार्ता महफूज़ रहती है और उपयोगकर्ता उसे बाद में भी देख सकता है। फेसबुक में चैट और मैसेज की विशेषताओं को मिला दिया गया है। फेसबुक आपको एक ईमेल एडरेस खुद भी फ़राहम करता है जो आपके यूज़रनेम (उपयोगकर्ता का नाम) पर आधारित होता है।

उदाहरणः– अगर आपका यूज़र नेम **seeman.hasan** है तो आपकी फेसबुक की **emailID: seeman.hasan@facebook.com** होगी। और उसे किसी भी ईमेल के तौर पर प्रयोग किया जा सकता है। मैसेज की विशेषता को प्रयोग करने के लिए साइड पैनल में **Messages** का लिंक मौजूद है। इसके अलावा किसी नये संदेश के मिलने पर सबसे ऊपर नोटीफिकेशन में आँकड़ें उपलब्ध किये जाते हैं कि कितने नये संदेश आये हैं। लाइक या पसंद करना फेसबुक की एक अहम विशेषता है जिससे उपयोगकर्ता किसी प्रकार के पत्र, तस्वीर या वीडियो आदि को पसंद करके उसे साझा करने वाले के उत्साह को बढ़ाता है। जब उपयोगकर्ता को कोई इस्टेटस, लिंक, तस्वीर या वीडियो पसंद आती है तो वह उसके साथ मौजूद लाइक के लिंक को क्लिक करता है जिससे लाइक के नम्बर आँकड़े **Count** में बढ़ोत्तरी हो जाती है कि अब तक कितने लोगों ने उसे पसंद किया है साथ ही फेसबुक आपकी प्रोफाइल में इस बारे में सूचना सुरक्षित कर देता है कि आपने उसे लाइक किया है। फेसबुक लाइक का फीचर्स फेसबुक से बाहर वेबसाइट और ब्लाग्ज़ के लिए भी उपलब्ध है। यहां यह लाइक बटन कहलाता है। टिप्पणी भी फेसबुक की विशेषताओं में से एक है। इसकी मदद से उपयोगकर्ता किसी भी स्टेटस लिंक, तस्वीर या वीडिया के बारे में अपने एहसासात टिप्पणी करके बताते हैं। लाइक की तरह फेसबुक कमेन्ट भी बाहर दूसरी वेबसाइट्स व ब्लाग्ज़ के लिए उपलब्ध हैं। मित्र और मित्र सूची फेसबुक में मित्र बनाने की प्रक्रिया का आरम्भ किसी को फ्रेन्ड्स रिक्वेस्ट भेजने से होता है। अगर आप वह रिक्वेस्ट स्वीकार कर लें तो वह आपका मित्र है। या यूं भी हो सकता है कि कोई और आपको फ्रेन्ड्स रिक्वेस्ट भेजे और आप उसे स्वीकार कर लें। हर दो तरीक़ों में उपयोगकर्ता के पास फ्रेन्ड्स रिक्वेस्ट को स्वीकार या अस्वीकार करने की आज़ादी है। मित्र बन जाने के बाद दोनों एक दूसरे की साझा की गई सूचना को देख सकते हैं, पसंद या टिप्पणी कर सकते हैं। किसी भी उपयोगकर्ता के प्रोफाइल में

जाएं तो दो विकल्प नज़र आयेंगे *Add friends & Subscribe* एड फ्रेन्ड्स किसी को मित्र बनाने अथवा सब्सक्राइब किसी को बिना मित्र बनाये उसकी गतिविधियों को देखने के लिए है।

## ट्विटर क्या है?

ट्विटर एक ऑनलाइन समाचारों और समाजी राबतों की साइट है जहाँ लोग संक्षिप्त संदेशों में वार्ता करते हैं जिसको ट्विटर कहते हैं। ट्विट करना हर उस व्यक्ति के लिए संक्षिप्त संदेश पोस्ट करना है जो आपकी ट्विटर पर पैरवी करता है, इस आशा के साथ कि आपके संदेश उनमें मौजूद किसी के लिए दिलचस्प और लाभदायक होंगे।

ट्विटर और ट्विट करने की एक और व्याख्या माइक्रो ब्लागिंग हो सकती है। कुछ लोग ऑनलाइन दिलचस्प लोगों और कम्पनियों की तलाश के लिए ट्विटर का प्रयोग करते हैं, और उनके ट्विटस पर पालन करने का चयन करते हैं।

ट्विटर इतना सर्वप्रिय क्यों है? नया पन होने के अलावा, ट्विटर की बड़ी खूबी यह है कि यह कितना 'स्केन दोस्ताना' है। आप सैकड़ों दिलचस्प ट्विटर उपयोगकर्ताओं का पता लगा सकते हैं और उनके संदेशों को एक नज़र से पढ़ सकते हैं। चीज़ों को स्केन दोस्ताना रखने के लिए ट्विटर, संदेश पहुंचाने के उद्देश्य की सीमा तक पाबन्दी लगाता है। हर माइक्रो ब्लाग ट्विट इन्ट्री 280 शब्द या उससे कम तक सीमित है।

इस साइज की पाबन्दी ने ट्विटर को एक सर्वप्रिय समाजी आला बना दिया है।

**ट्विटर कैसे काम करता है:–**

ट्विटर को ब्राडकास्टर या प्राप्तकर्ता के तौर पर प्रयोग करना आसान है। आप मुफ़्त अकाउंट और ट्विटर के नाम के साथ शामिल हों तब आप रोज़ाना, अपनी पसंद के अनुसार कास्ट भेजते हैं। ''क्या हो रहा है'' के बाक्स पे जायें 280 या उससे कम शब्द टाइप करें, और ट्विट पर क्लिक करें। वह लोग जो आपकी पैरवी करते हैं और जो लोग नहीं करते हैं, वह आपका ट्विट देखेंगे। उन लोगों का प्रोत्साहन करें जिन्हें आप जानते हैं। वह आपकी पैरवी करें और उनके ट्विटर फीड में अपने ट्विट्स वसूल करें। जब लोग आपकी पैरवी करते हैं तो ट्विटर के आदाब से आप उनके पीछे–पीछे चलने की मांग करते हैं। ट्विटर फीड हासिल करने के लिए किसी को तलाश करें और उनके ट्विटरस को सब्सक्राइब करने के लिए फॉलो दबाएं। अपने ट्विटर फीड को पढ़ने के लिए, ट्विटर डॉट कॉम पर अपने अकाउन्ट पे जाएं।

**ट्विटर बतौर मार्किटिंग टूल (विपणन उपकरण):–**

हज़ारों व्यक्ति इसे प्रयोग करके अपनी भरती सेवांए, समीक्षिक व्यावसायिक संगठनों और फुटकर स्टोरों का विज्ञापन करते हैं और यह काम करता

है। आजकल के उपयोगकर्ता टेलीवीज़न के विज्ञापनों से तंग आ गया है। लोग उस विज्ञापन को तरजीह देते हैं जो तेज़, कम हस्तक्षेप वाला हो और उसे अपनी मरज़ी से ऑन या ऑफ किया जा सके। ट्विटर बिल्कुल वही है। जब आप यह सीखते हैं कि ट्विट करने की बारीकी किस तरह काम करती है तो आप ट्विटर का प्रयोग करके विज्ञापन के अच्छे परिणाम हासिल कर सकते हैं।

**ट्विटर बतौर सामाजिक संदेश उपकरण–**

हाँ, ट्विटर सोशल मीडिया है, लेकिन यह तत्कालीन संदेश पहुंचाने से ज़ियादा है। ट्विटर दुन्या भर के दिलचस्प लोगों के ढूंढने के बारे में है। यह उन लोगों की पैरवी के बारे में हो सकता है जो आप और आपके काम में दिलचस्पी रखते हों और उन पैरोकारों को हर दिन कुछ ज्ञान का मूल्य अदा करते हों। ट्विटर दूसरों के साथ काम देखभाल करने वाले सामाजिक राबते को बरक़रार रखने का एक तरीक़ा है और हो सकता है वह छोटे या बड़े लोगों पर असर अंदाज़ हो। क्योंकि ट्विटर प्रसिद्ध लोगों को पसंद है? ट्विटर सोशल मीडिया प्लेटफार्म में सबसे ज़्यादा प्रयोग किया जाता है। मशहूर लोग अपने अपने प्रशंसकों के साथ निजी सम्बन्ध क़ायम करने के लिए ट्विटर का प्रयोग करते हैं। उनकी रोज़ाना की ताज़ातरीन जानकारियां उनके पैरोकारों के साथ राबतों को बढ़ावा देती हैं। ट्विटर तत्कालीन पैग़ाम पहुंचाने, ब्लागिंग और टेक्सटिंग का मिश्रण है।

**यूट्यूब का परिचय और संस्थापकः–**

यूट्यूब वीडियोज़ पेश करने वाली एक वेबसाइट है जहां उपयोगकर्ता अपनी वीडियोज़ शामिल और पेश कर सकते हैं। पेपाल के तीन पूर्ववर्ती सेवकों ने फरवरी 2005 में यूट्यूब क़ायम किया। नवम्बर 2006 में गूगल इंकॉरपोरेटेड ने 65.10 अरब डॉलर के बदले यूट्यूब को ख़रीद लिया और यह गूगल के अधीन संस्था के तौर पर काम कर रहा है। इसका मुख्यालय सानब्रूनो, केली–फोरनिया, अमेरिका में स्थित है। यूट्यूब उपयोगकर्ताओं को वीडियो दिखाने के लिए एडोब की फ्लेश वीडियो टेकनोलॉजी प्रयोग करता है। यूट्यूब पर पेश होने वाली अधिकतर चीज़ें व्यक्तिगत तौर पर उसके उपयोगकर्ताओं की तरफ़ से प्रस्तुत किया जाता है। मीडिया संस्थाएं भी यूट्यूब साझेदारी योजना के तहत अपनी कुछ सामग्री पेश करती हैं।

यूट्यूब की शर्तों के तहत रुसवाई का कारण बनने वाली अश्लील, विद्वानों के अधिकारों को उल्लंघन करने वाली सामग्री पेश नहीं की जा सकती है। हालांकि इस शर्त पर यूट्यूब पूरा पालन करने से कतरा रहा है। पर अब बनाये गये

नियमों का पालन करवाने में सख़्ती शुरु हो गई है। पंजीकृत उपयोगकर्ताओं के खाते 'चेनल्स' कहलाते हैं। यूट्यूब अंग्रेज़ी के अलावा 16 से अधिक अन्य ज़बानों में सहूलियत संग्रहीत करता है जिनमें अरबी, उर्दू, चीनी, समेत अन्य ज़बानें भी शामिल हैं। यूट्यूब ने अपने कारोबार में अधिक उन्नति करते हुए कई सारी विशेषताएं उपलब्ध करवा दी है। यूट्यूब अपना बिज़नेस साझेदारी पर करता है जिसमें वीडियोज़, विज्ञापनों, चलने वाले घंण्टे, पसंद करने वाले, फैलाने वाले और लिखने वाले के ज़रिए कार्यशैली पर सीमित आय दी जाती है। यूट्यूब अपना वर्तमान फीचर्स (Youtube Kids) यूट्यूब किड्स के नाम से बच्चों के लिए लाया है। कुछ ही समय में इसके प्रयोग करने वालों की संख्या 50 मिलियन से पार कर चुकी है। इसी तरह 'यूट्यूबगो' की सुविधा उनके लिए आसानी उपलब्ध करा रहा है जहां इंटरनेट कनेक्शन की गति धीमी है। यूट्यूब किड्स की तीन विशेषताएं हैं– माता–पिता को बच्चों पर अधिक कंट्रोल प्रदान करने के लिए तीन नये फीचर्स दिये हैं जिनमें सक्रिय असक्रिय पेरेन्टल कंट्रोल टाइमर, कलेक्शंस, पैरेन्ट अपरूव्ड कंटेन्ट (माता–पिता द्वारा सवीकृत सामग्री और सर्च ऑफ शामिल हैं)

**पैरेन्टल कंट्रोलः–**

इससे पॉसवर्ड यानी लॉक लगाया जा सकता है। टाइमर– इससे वीडियो चलने का समय निश्चित किया जा सकता है जिसके बाद स्वयं बंद हो जायेगा।

क्लेक्शन– इससे उन विषयों और चैनलों का चयन किया जा सकता है जो आप अपने बच्चों को दिखाना चाहते हैं।

पैरेंट अपरूव्ड कंटेन्टः– इसमें इस बात का अधिकार है कि पहले आप स्वयं हर वीडिया को अपने बच्चों के लिए चुन सकते हैं।

सर्च ऑफः– इससे यह निश्चित किया जा सकता है कि बच्चे क्या क्या सर्च करें।

यूट्यूब किड्स के प्रोडक्ट डारेक्टर जेम्स बेसेर ने अपने बयान में कहा है कि हमारा उद्देश्य यह था कि दुन्या भर में बच्चे ऐसी वीडियोज़ देख सकें जिससे वह कुछ सकारात्मक सीखें।

**इंस्टाग्राम क्या है?:–**

यह एक मोबाईल एप्लीकेशन है जो 2010 में तैयार की गई, जिसका इरादा सोशल नेटवर्किंग है। एक ही समय में आप फोटो और वीडिया और बहुत सारी चीज़ें अपलोड कर सकते हैं। इसका प्लेटफार्म आईफोन, आईपैड, आईपोट टच, एंड्राइड और कम्प्यूटर पर मोबाइल फोन एमुलेटर डाउन लोड करके उपलब्ध है। हर तस्वीर लेने और वीडियो रिकार्ड करने के बाद आप उसे उत्तम सुंदरता देने और आकर्षित बनाने के लिए प्रस्तुत फीचर्स के साथ एडजस्टमेंट कर सकते हैं। इंस्टाग्राम की एक विशेषता यह भी है कि

**शेष पृष्ठ .....40....पर**

# घटना एक अंध विश्वास की

—ब—क़लम : फौज़िया सिद्दीक़ा

मिडिल स्कूल के उस्तादों में मेरे एक उस्ताद हकीम मुहम्मद मिर्ज़ा उर्फ़ मम्दू थे बड़े अच्छे उस्ताद थे उर्दू फ़ारसी और हिसाब पढ़ाते थे फ़र्स्ट एड के साथ स्काउटिंग का अतिरिक्त विषय भी उनके ज़िम्मे था वह जहां पढ़ाने में कुशल थे यूनानी इलाज में भी दक्ष थे यूनानी इलाज में उन की ख्याति दूर तक थी दूर—दूर से रोगी उन के पास इलाज के लिए आते थे।

एक दिन उन्होंने अंध विश्वास विषय के अन्तर्गत यह घटना क्लास में इस प्रकार सुनाई थी। रुदौली के क़रीब एक गांव में एक खाते पीते घर के एक नव युवक को अफ़ारा हो गया लैट्रिन बन्द हो गई नवयुवक के पिता एक तांत्रिक (हिन्दू आमिल) को इलाज के लिए बुला लाये तांत्रिक ने लौंग और काफ़ूर जलाया कुछ पढ़ा और कहा नटवीर का प्रभाव है हम अपने बलवीर द्वारा इस को भगा देंगे।

तांत्रिक का अनुमान था कि कोई अलौकिक शक्ति उस की सहयोगी रहती है उस का नाम उस ने बलवीर रख रखा था।

तांत्रिक देर तक कुछ पढ़ता और बलवीर को बुलाता रहा, कुछ लाभ न देख कर नवयुवक के भाई ने कहा, पिता जी कहां तांत्रिक के चक्कर में पड़े हो यह निरा अंध विश्वास है, भय्या को तुरन्त रुदौली ले चलो और हकीम मम्दू को दिखाओ पिता जी ने बात मान ली पड़ोसी ने मदद की हम उसे लेकर हकीम जी के यहाँ गये, हकीम जी ने ध्यान से देखा और उचित मात्रा में जमाल गोटा खिला दिया और कहा इनको जहां रोगी ठहराये जाते हैं वहां ले जाओ और प्रतीक्षा करो एक घण्टे बाद इनको पाख़ाना होगा उस वक़्त मुझे ख़बर करो, रोगी को ले गये प्रतीक्षा करने लगे किसी के पास घड़ी तो थी नहीं बीस मिनट बीते होंगे कि कहने लगे एक घण्टा हो गया पाख़ाना नहीं हुआ यह रोग नहीं है आसेब है तांत्रिक के पास ले चलो अतएव रोगी को एक घण्टा के अन्दर तांत्रिक के पास पहुंचा दिया तांत्रिक ने फ़िर लौंग पढ़ी उधर घंटा पूरा हो गया था पाख़ाना शुरुअ़ हुआ नवयुवक के पिता ने कहा देखा हमने कहा न था समस्या रोग की नहीं आसेब की है लेकिन जब सात आठ दस्त हो चुके तो लोगों ने तांत्रिक से कहा अब यह दस्त रोको तांत्रिक ने उत्तर दिया हमारा बलवीर मारे डर के बहुत दूर भाग गया है हमारे काबू से बाहर है नवयुवक के भाई ने कहा पिता जी कब तक अंधविश्वास में रहेंगे भय्या को हकीम साहब के पास पहुंचाओ, उन्होंने कहा था जब पाख़ाना हो तो हम को बताना, हम फिर हकीम जी के पास पहुँचे तो सूरज डूब चुका था उन्होंने रोगी को देखा और कहा जाओ हलवाई की दुकान से तीन चार सेर (उस वक़्त किलो न था) दही लाओ अतएव दही आ गया उन्होंने कहा जहां रोगी ठहराए जाते हैं वहां इन को ले जाओ और दही

पिलाना आरम्भ करो जैसे भी हो कम से कम तीन सेर दही पिलाओ रोगी को ले गये और दही पिलाना आरम्भ कर दिया दो तीन घण्टों के बाद दस्तों में कमी हुई आधी रात के बाद दस्त रुक गया और रोगी सो गया। दूसरे लोग भी सफ़ाई करके सो गये। हकीम साहब ने बताया कि सुब्ह को कुछ उचित दवाएं दे कर रुख़सत किया और हिदायत दी कि दवा इलाज में अंधविश्वास में न पड़ा करो।

(यह तवह्हुम का वाक़िआ उस्ताद ने फ़सीह़ उर्दू में सुनाया था मैंने हिन्दी में बदल दिया)

❖❖❖

**सोशल मीडिया का.....**

उपयोगकर्ता 'दिल' के साथ किसी दूसरे व्यक्ति की सामग्री का मूल्यांकन कर सकते हैं और उसे खुद प्लेटफार्म पर या दूसरे सोशल नेटवर्कस पर शेयर कर सकते हैं।आप उन एकांउन्ट्स को ढूंढ कर पैरवी कर सकते हैं जिनकी सामग्री आपको पसंद है। अगर आप कुछ अपने मित्रों को भेजने के लिए महफूज़ करना चाहते हैं तो आप निजी संदेश के ज़रिए भी कर सकते हैं।

❖❖❖

**घरेलू मसाएल .....**

की औलाद हैं इसलिए पति बीवी को हक़ीर न समझे। निकाह हो जाने के बाद दोनों के बारे में दुआ–ए–खैर किया जाए कि नेक औलाद मिले और दोनों के हक में यह निकाह बरकत का ज़रिया बने। आप (स०) हज़रत फ़ातिमा के निकाह के बाद यह दुआ दी थी ''ज मअल्लाहुशमुलकुमा व अज्जकुमा बारिक अलैकुमा व अखरि ज मिनकुमा कसीरन तैय्यिबा (अल–मवाहिबुल्ल –दुन्नियहमअशशरहलीज्ज ज़र्कानी जिल्द 2 पृष्ठः 6)

❖❖❖

## प्यारे नबी सल्ल0 की प्यारी बातें

1. जन्नत माँ के पैरों के तले है।
2. निरक्षर से निर्धन अच्छा, माल से बुद्धि भली।
3. अज्ञानी से बढ़ कर कोई कंगाल नहीं।
4. विद्या प्राप्त करना प्रत्येक मुस्लिम नर नारी का कर्तव्य है।
5. जो तुम्हें पसन्द हो वही दूसरे के लिए पसन्द करो।
6. पेट सारे रोगों का घर है, संयम वास्तविक उपचार है।
7. बोलो सच, चाहे अपनी हानि हो।
8. बड़ों का आदर तथा छोटों से प्यार, जो ऐसा न करे वह हम में से नहीं।
9. ज़मीन वालों पर तुम दया करो, आसमान वाला तुम पर दया करेगा।
10. नेकी पर उभारना स्वयं नेकी करना है, बदी पर उकसाना स्वयं बदी करना है।

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ - ٹیگور مارگ
لکھنؤ - ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25.04.2020 तारीख़

# अहले खैर हज़रात से!

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम की सरपरस्ती में दारुल उलूम नदवतुल उलमा अपनी इल्मी व दीनी तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों एवं नियमों को सीने से लगाये हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था, यानी नये ज़माने में इस्लाम की मुअस्सिर और सही तर्जुमानी, दीन व दुन्या की व्यापकता और इल्म व रुहानियत के एकता की कोशिश, फितन–ए–लादीनियत और ज़ेहनी इरतिदाद का मुकाबला, इस्लाम पर एतिमाद और उलूमेइस्लामिया की बरतरी व इम्तियाज़ का ऐलान व इज़हार, दीने हक से वफादारी और शरीअत पर इस्तिक़ामत।

आपसे हमारी अपील है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत को समझते हुए पूरी फराख़दिली, फ़य्याज़ी और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर तआउन व मदद फरमायें कि हिन्दुस्तान में दीन के किलों की हिफ़ाज़त का इससे बेहतर रास्ता और इससे ज़ियादा पायदार कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

जैसा कि आप को मालूम है कि रमज़ानुल मुबारक के मौक़े पर दारुल उलूम नदवतुल उलमा के असातिज़ा, सुफ़रा व मुहस्सिलीन आप हज़ारात की ख़ितमत में हाज़िर हो कर सद्क़ात व जक़ात व चन्दे की वसूलयाबी का काम अंजाम देत हैं लेकिन इस वक़्त पूरे मुल्क में क्रोना वायरस की वजह से लॉकडाउन है, ऐसे हालात में सफ़र करना ना मुम्किन है इसलिए आप के चन्दे की वसूलयाबी बैंक द्वारा ही मुम्किन है।

इसलिए आप हज़रात से अपील है कि अपने सद्क़ात व अतियात चेक/ड्राफ्ट और ऑन लाइन, नदवतुल उलमा के खातों में भेजें ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में नदवतुल उलमा के साथ आप का तआउन निहायत अहमियत रखता है, अल्लाह तआला हम सब की कोशिशों को कबूल फ़रमाये और उनको हमारे लिए ज़ख़ीर–ए–आख़िरत बनाये। आमीन

(मौलाना) मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी
नायब नाज़िम नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

(प्रोफेसर) अतहर हुसैन
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
**NADWATUL ULAMA**
और इस पते पर भेजें:
**NAZIM NADWATUL ULAMA**
**Nizamat Office, Nadwatul Ulama.**
**Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)**

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

**नदवतुल उलमा**
**A/C No. 10863759711** (अतियात)
**A/C No. 10863759766** (ज़कात)
**A/C No. 10863759733** (तअ़मीर)
**SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW**
**(IFSC: SBIN0000125)**

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961** के तहत छूट प्राप्त होगी।
**Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in**

# उर्दू सीखये —इदारा

**नीचे लिखे उर्दू के अशआर पढ़िये,**
**मुश्किल आने पर बाद में लिखे हिन्दी अशआर से मदद लीजिए**

رب کی محبت دل میں ہمارے رب کی عبادت کرتے ہیں۔
پیارے نبی محبوب ہمارے ان کی طاعت کرتے ہیں۔
نبی کی طاعت والی عبادت ہوتی ہے مقبول ضرور۔
سلام و رحمت پیارے نبی پر رغبت سے ہم پڑھتے ہیں۔
مومن ہوکر نبی کو دیکھا موت ہوئی ایمان پر۔
جس نے بھی یہ دولت پائی اس کو صحابی کہتے ہیں۔
سارے صحابہ اللہ والے سارے صحابہ جنت والے۔
سب کے سب رہنما ہمارے سب سے عقیدت رکھتے ہیں۔
بو بکر عمر عثمان علی کا درجہ سب سے اونچا ہے۔
امت میں اصحاب نبی سب اونچا درجہ رکھتے ہیں۔

**रब की महब्बत दिल में हमारे रब की इबादत करते हैं**
**प्यारे नबी महबूब हमारे उनकी ताअ़त करते हैं**
**नबी की ताअ़त वाली इबादत होती है मक़बूल ज़रूर**
**सलाम व रहमत प्यारे नबी पर रग़बत से हम पढ़ते हैं**
**मोमिन हो कर नबी को देखा मौत हुई ईमान पर**
**जिसने भी ये दौलत पाई उसको सहाबी कहते हैं**
**सारे सहाबा अल्लाह वाले सारे सहाबा जन्नत वाले**
**सब के सब रहनुमा हमारे सब से अ़कीदत रखते हैं**
**बूबक्र उमर उस्मान अली का दर्जा सब से ऊँचा है**
**उम्मत में अस्हाबे नबी सब ऊँचा दर्जा रखते हैं।**